कार्यालय, मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी
समग्र शिक्षा, ब्लॉक–भीण्डर (उदयपुर)

संकल्प-2022

(एक अभिनव पहल)

प्रश्न बैंक

हिन्दी अनिवार्य

कक्षा – 12

बोर्ड परीक्षा परिणाम में गुणात्मक एवं संख्यात्मक उन्नयन हेतु अभिनव कार्ययोजना के तहत् निर्मित

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

मुख्य संरक्षक

कानाराम , IAS
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा
राजस्थान, बीकानेर

एन्जिलिका पलात
संयुक्त निदेशक
स्कूल शिक्षा, उदयपुर

ओम प्रकाश आमेटा
मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी
उदयपुर

संरक्षक

रमेश सीरवी पुनाड़िया, RAS
उपखण्ड अधिकारी
भीण्डर,उदयपुर

श्रवण सिंह राठौड़, RAS
उपखण्ड अधिकारी
वल्लभनगर, उदयपुर

मार्गदर्शन

महेन्द्र कुमार जैन
मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, ब्लॉक भीण्डर, उदयपुर

भेरुलाल सालवी
अति.मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी

रमेश खटीक
अति.मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी

गिरिश चौबीसा
संदर्भ व्यक्ति

महेन्द्र कोठारी
संदर्भ व्यक्ति

संयोजक

नरेश कुमार काहाल्या, प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि. भटेवर उदयपुर

कार्यकारी दल

चन्द्र भानु व्यास, व्याख्याता, रा.उ.मा.वि. गुपड़ी
चन्द्र प्रकाश औदिच्य, व्याख्याता, रा.उ.मा.वि. टुस डांगियान
गीता मुण्डेल, व्याख्याता, रा.उ.मा.वि. माल की टुस
नेहा रत्नु, व्याख्याता, रा.उ.मा.वि. नांदवेल
भगवती लाल मेनारिया, वरिष्ठ अध्यापक, रा.उ.मा.वि. मन्देसर
लीला मेनारिया, अध्यापक, रा.उ.मा.वि. भटेवर

CBEO BHINDER

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

—: सहयोगकर्ता :—

मोनिका लौहार क. अनुदेशक रा.उ.मा.वि मन्देसर

अनुक्रमणिका

क.सं.	विवरण	पेज नं.
1	**मा.शि.बो.राजस्थान पाठ्यक्रम**	4-8
2	अपठित गद्यांश	9-12
3	अपठित पद्यांश	12-15
4	निबंध	16
5	पत्र व प्रारूप लेखन (अर्द्धशासकीय पत्र, निविदा, ज्ञापन, अधिसूचना)	16-22
6	विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन पर आधारित	23-24
7	फीचर लेखन/आलेख	24
8	व्याकरण (भाषा, व्याकरण, लिपी का परिचय), शब्द शक्ति, अलंकार, पारिभाषिक शब्दावली)	25-29
9	व्याख्या गद्य भाग	30-33
10	व्याख्या पद्य भाग	34-40
11	पाठ्यपुस्तक आरोह भाग–2 के प्रश्न–उत्तर	41-57
12	कवि/लेखक परिचय	58-61
13	पाठ्यपुस्तक वितान के प्रश्न–उत्तर	61-65

CBEO BHINDER

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान,

अजमेर

परीक्षा–2022 के लिए संक्षिप्तिकृत पाठ्यक्रम

कक्षा– 12

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

सामान्य दिशा–निर्देश

1. कोविड–19 परिपेक्ष्य में लम्बे समय तक विद्यालय नहीं खुले और विधिवत शिक्षण बाधित हुआ है अतः परीक्षा 2022 के लिए विभागीय निर्देशानुसार पाठ्यक्रम में 30 प्रतिशत कटौती की गई है।
2. पूर्ण पाठ्यक्रम बोर्ड वेबसाईट पर पूर्व में ही अपलोड कर दिया गया था अतः यहां केवल पाठ्यक्रम में सम्मिलित अध्याय/ईकाई के नाम एवं अंकभार का उल्लेख किया गया है तथा **पाठ्यक्रम से हटाये गये अध्यायों का विवरण पृथक से दिया गया है।**
3. **प्रायोगिक परीक्षा वाले विषयों में विद्यालय में उपलब्ध संसाधनों को ध्यान में रखते हुए संस्था प्रधान व परीक्षक 30 प्रतिशत पाठ्यक्रम की कटौती अपने स्तर पर करें।**
4. **एसे विषय जिनकी परीक्षा बार्ड स्तर पर आयोजित नहीं होती तथा सत्र पर्यन्त मूल्यांकन के आधार अंक/ग्रेडिंग विद्यालय द्वारा बोर्ड को प्रेषित किये जाते हैं उनके पाठ्यक्रम में 30 प्रतिशत कटौती संस्था प्रधान/विषयाध्यापक स्वयं के स्तर पर सत्र पर्यन्त कराये गये अध्यापन के आधार पर करें।**
5. पाठ्यक्रम में सम्मिलित विषयवस्तु की अध्याय/ईकाईवार विस्तृत जानकारी के लिए पूर्व में अपलोड पाठ्यक्रम का अवलोकन करें।
6. बोर्ड परीक्षा के प्रश्नपत्रों में पाठ्यक्रम में दिये गये इकाई वार अंक एवं अंक भार में 25 प्रतिशत तक विचलन/परिवर्तन सम्भव है।
7. प्रश्न पत्रों में बहुचयनात्मक, अतिलघूत्तरात्मक, लघूत्तरात्मक, निबन्धात्मक सभी प्रकार के प्रश्न पूछे जायगें । मॉडल प्रश्न पत्र शीघ्र ही वेबसाईट पर अपलोड किये जायेगें।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान

परीक्षा 2022 के लिए संक्षिप्तिकृत पाठ्यक्रम

अनिवार्य हिन्दी–कक्षा 12

विषय कोड–01

इस विषय की परीक्षा योजना निम्नानुसार है—

प्रश्न–पत्र	समय (घंटे)	प्रश्न–पत्र के लिए अंक	सत्रांक	पूर्णांक
एक पत्र	3.15	80	20	100

अधिगम क्षेत्र	अंक
अपठित बोध	12
रचनात्मक लेखन	16
व्यावहारिक व्याकरण	8
पाठ्यपुस्तक : **आरोह** (भाग–2)	32
पाठ्यपुस्तक : **वितान** (भाग–2)	12

खण्ड–1

अपठित बोध **12 अंक**

(क) अपठित गद्यांश (अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न) (6 प्रश्न × 1 अंक) 6 अंक

(ख) अपठित पद्यांश (अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न) (6 प्रश्न × 1 अंक) 6 अंक

खण्ड–2

रचनात्मक लेखन **16 अंक**

(1) निबन्ध लेखन। (विकल्प सहित) (300 शब्द) 5 अंक

(2) पत्र व प्रारूप लेखन (अर्द्धशासकीय पत्र, निविदा, विज्ञप्ति, ज्ञापन, अधिसूचना) (विकल्प सहित) 4 अंक

अभिव्यक्ति एवं माध्यम पाठ्यपुस्तक पर आधारित–

(3) विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन पर आधारित 2 लघूत्तरात्मक प्रश्न (30–40 शब्दों में उत्तर) 4 अंक

(4) फीचर लेखन/आलेख (100 शब्दों में उत्तर) 3 अंक

व्यावहारिक व्याकरण **8 अंक**

(1) भाषा, व्याकरण एवं लिपि का परिचय 2 अंक

(2) शब्द शक्ति 2 अंक

(3) अलंकार 2 अंक

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

(4) पारिभाषिक शब्दावली 2 अंक

खण्ड-3

पाठ्यपुस्तक–आरोह–भाग 2 **32 अंक**

(i) 1 व्याख्या गद्य भाग से (विकल्प सहित) 1 × 6 = 6 अंक

(ii) 1 व्याख्या पद्य भाग से (विकल्प सहित) 1 × 6 = 6 अंक

(iii) 2 निबंधात्मक प्रश्न (1 प्रश्न गद्य से एवं 1 प्रश्न पद्य भाग से विकल्प सहित) (100 शब्दों में उत्तर) 2 प्रश्न × 5 = 10 अंक

(iv) 1 लघूत्तरात्मक प्रश्न (पद्य भाग से) (30–40 शब्दों में उत्तर) 2 अंक

(v) 1 लघूत्तरात्मक प्रश्न (गद्य भाग से) (40–60 शब्दों में उत्तर) 3 अंक

(vi) किसी एक कवि या लेखक का परिचय (80–100 शब्दों में उत्तर) 1 × 5 = 5 अंक

खण्ड-4

पाठ्यपुस्तक–वितान भाग 2 **12 अंक**

(क) 1 निबंधात्मक प्रश्न (विकल्प सहित) (120 शब्दों में उत्तर) 1 प्रश्न × 6 = 6 अंक

(ख) 6 अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न (20 शब्दों में उत्तर) 6 प्रश्न × 1 = 6 अंक

कक्षा.–12 **विषय– अनिवार्य हिन्दी.** **कुल पूर्णांक– 80**

क्रम संख्या	परीक्षा 2022 के लिए संक्षिप्तिकृत पाठ्यक्रम		अंक भार
1.	**अपठित बोध**	(यथावत रहेगा)	12
2.	**रचनात्मक लेखन**	(यथावत रहेगा)	09
3.	**अभिव्यक्ति एवं माध्यम पाठ्यपुस्तक पर आधारित**	(यथावत रहेगा)	07
4.	**व्यावहरिक – व्याकरण**	(यथावत रहेगा)	08
5.	**पाठ्यपुस्तक – आरोह – भाग 2 (पद्य) पाठ्यक्रम में सम्मिलित अध्याय**		32
	1. हरिवंश राय बच्चन –	(सम्पूर्ण पाठ)	
	2. आलोक धन्वा –	(सम्पूर्ण पाठ)	
	3. कुँवर नारायण –	(सम्पूर्ण पाठ)	
	4. रघुवीर सहाय –	(सम्पूर्ण पाठ)	
	5. गजानन माधव मुक्तिबोध –	(सम्पूर्ण पाठ)	
	6. शमशेर बहादुर सिंह –	(सम्पूर्ण पाठ)	
	9. फिराक गोरखपुरी –	(सम्पूर्ण पाठ)	
	गद्य–पाठ		
	11. महादेवी वर्मा –	(सम्पूर्ण पाठ)	
	12. जैनेन्द्र कुमार –	(सम्पूर्ण पाठ)	
	13. धर्मवीर भारती –	(सम्पूर्ण पाठ)	
	14. फणीश्वर नाथ रेणु –	(सम्पूर्ण पाठ)	
	16. रजिया सज्जाद ज़हीर –	(सम्पूर्ण पाठ)	
	17. हजारी प्रसाद द्विवेदी –	(सम्पूर्ण पाठ)	
6.	**पाठ्यपुस्तक वितान भाग–2**		12
	1. सिल्वर वैडिंग –	(सम्पूर्ण पाठ)	06
	2. जूस –	(सम्पूर्ण पाठ)	06

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

परीक्षा 2022 के लिए विलोपित किये गये अध्याय/इकाई का विवरण

कक्षा–12 विषय.– अनिवार्य हिन्दी कुल पूर्णांक– 80

क्रम संख्या	परीक्षा 2022 के लिए विलोपित किये गये अध्याय / इकाई का विवरण
1.	**पाठ्यपुस्तक आरोह भाग – 02 पद्य** 7. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (सम्पूर्ण पाठ) 8. तुलसीदास (सम्पूर्ण पाठ) 10. उमाशंकर जोशी (सम्पूर्ण पाठ) **गद्य भाग** 15. विष्णु खरे (सम्पूर्ण पाठ) 18. बाबा साहेब भीमराव आम्बेडकर (सम्पूर्ण पाठ) **पाठ्यपुस्तक वितान भाग– 2** 3. अतीत मे दबे पॉव (सम्पूर्ण पाठ) 4. डायरी के पन्ने (सम्पूर्ण पाठ)

निर्धारित पुस्तकें–

1. **आरोह-भाग 2**–एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित
2. **वितान-भाग 2**–एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित
3. **अभिव्यक्ति एवं माध्यम**–एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

प्रश्न 1 निम्नलिखित अपठित गद्यांश पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

गद्यांश (1)

जिन्दगी के असली मजे उनके लिए नहीं है, जो फूलो की छांह के नीचे खेलते और सोते है बल्कि फूलो की छांह के नीचे अगर जीवन का कोई स्वाद छिपा है, तो वह भी उन्ही के लिए है जो दूर रेगिस्तान से आ रहे है, जिनका कण्ठ सुखा हुआ, ओंठ फटे हुए और सारा बदन पसीने से तर है। पानी में अमृत वाला तत्व है, उसे वह जानता है जो धूप में सूख चुका है। वह नहीं जो रेगिस्तान में कभी पड़ा ही नही है।

सुख देने वाली चीजे पहले भी थी और आज भी है, फर्क यह है कि जो सुखों का मूल्य पहले चुकाते है और उनकेमजे बाद में लेते है उन्हे स्वाद अधिक मिलता है। जिन्हे आराम आसानी से मिल जाता है, उनके लिए आराम ही मौत है। जो लोग पाँव भीगने के खौफ से पानी से बचते रहते है, समुद्र में डूब जाने का खतरा उन्ही के लिए है। लहरों में तैरने का जिन्हे अभ्यास है, वे मोती लेकर बाहर आएँगे।

(क) फूलो की छांह के नीचे सोने और खेलने का क्या तात्पर्य है?

उत्तर–फूलो की छांह के नीचे सोने और खेलने का तात्पर्य सुखी तथा आरामतलब जीवन व्यतीत करने में तथा श्रम से बचने से है।

(ख) रेगिस्तान की यात्रा करने से क्या कष्ट होता है?

उत्तर– उनका गला सूख जाता है और होंठ फट जाते है उसका पूरा शरीर गर्मी और पसीने से लथपथ हो जाता है।

(ग) जिंदगी का मजा कौन उठा सकता है?

उत्तर– कठोर श्रम करने वाले तथा कठिनाइयों से जूझने वाले ही जिंदगी का असली मजा उठा सकते है।

(घ) सुख देने वाली चीजों से अधिक सुख किनको मिलता है?

उत्तर– सुख देने वाली चीजे सुख तो देती है परन्तु जो पहले कष्ट उठा चुका होता है उसको उन चीजों से ज्यादा सुख मिलता है।

(ङ.) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए?

उत्तर– 'सच्चा जीवन'

CBEO BHINDER
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

गद्यांश (2)

स्वावलम्बन का गुण सभी को सरलता से प्राप्त हो सकता है। यह किसी एक विशेष जाति, विशेष धर्म तथा विशेष देश के निवासी की सम्पति नहीं है। स्वावलम्बन सभी के लिए चाहे वह पुंजीपति हो या मजदूर, पुरूष हो स्त्री, वृद्ध हो या बालक, काला हो या गोरा, शिक्षित हो या अशिक्षित, प्रत्येक समय प्रत्येक स्थान पर सुलभ है। इतिहास साक्षी है कि अत्यन्त दीन तथा निर्धन व्यक्तियों के स्वावलम्बन के अलौकिक गुण द्वारा महान् उन्नति की है।

समाचार पत्र बेचने वाला एडिसन एक दिन महान् उपन्यासकार हुआ। चन्द्रगुप्त नामक एक निर्धन और साधारण सैनिक भारत का चक्रवती सम्राट हुआ। हैदरअली प्रारम्भ में एक सिपाही था, स्वावलम्बन के कारण ही उसने दक्षिण भारत में अपना राज्य स्थपित किया ईश्वरचन्द्र विद्यासागर हमारे भारत के ख्याति प्राप्त नवरत्न थे। कहा जाता है कि उन्होने अंग्रेजी अक्षरों का ज्ञान सड़क किनारे गडे हुए मील के पत्थरों से किया था।

प्रश्न–

(अ) स्वावलम्बन गुण का क्या महत्व है? बताइये।

(ब) चन्द्रगुप्त साधारण सैनिक से सम्राट कैसे बना?

(स) स्वावलम्बन का महत्व क्या है?

(द) "समाचार पत्र बेचने वाला एडिसन महान् उपन्यासकार है" यह किस प्रकार का वाक्य है?

(य) अलौकिक शब्द में मूल शब्द और उपसर्ग–प्रत्यय बताइये।

(र) गद्यांश का उपर्युक्त शीर्षक लिखिए।

उत्तर–

(अ) स्वावलम्बन का गुण सभी मनुष्यों की उन्नति के लिए परमावश्यक है

(ब) चन्द्रगुप्त स्वावलम्बन गुण से साधारण सैनिक से चक्रवर्ती सम्राट बना।

(स) स्वावलम्बन का महत्व है आत्मनिर्भर होकर काम करना।

(द) यह साधारण वाक्य है।

(य) अलौकिक = 'अ' उपसर्ग +'लोक' शब्द +'इक' प्रत्यय

(र) शीर्षक–स्वावलम्बन का महत्व

CBEO BHINDER

गद्यांश (3)

तुलसी हमारे जातीय जन–जागरण के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। उनकी कविता की आधारशिला जनता की एकता है। मिथिला से लेकर अवध और ब्रज तक चार सौ साल से तुलसी की सरस वाणी नगरों और गॉवों में गूँजती है। साम्राज्यवादी,सामन्ती अवशेष और बड़े पूँजीपतियों के शोषण से हिन्दी–भाषी जनता को मुक्त करके उसकी जातीय संस्कृति को विकसित करना हैं। हमारे जातीय संगठन के मार्ग में साम्प्रदायिकता,उॅच–नीच के भेद–भाव, नारी के प्रति सामन्ती शासक का रूख आदि अनेक बाधाऍ हैं।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

तुलसी का साहित्य हमें इनसे संघर्ष करना सिखाता है। तुलसी का मूल सन्देश है, मानव–प्रेम को सक्रिय रूप देना, सहानुभूति को व्यवहार में परिणत करके जनता के मुक्ति–संघर्ष में योग देना हमारा कर्तव्य हैं।

प्रश्न (अ) तुलसी–साहित्य से हमें क्या शिक्षा लेनी चाहिए?

(ब) तुलसीदास जी के अनुसार जातीय संगठन के मार्ग में कौनसी बाधाएँ है?

(स) तुलसी ने मनुष्य का क्या कर्तव्य बताया है?

(द) तुलसी का साहित्य हमें इनसे संघर्ष करना सिखाता हैं। यह किस प्रकार का वाक्य हैं?

(य) 'साम्प्रदायिकता' शब्द में मूल शब्द और प्रत्यय बताइये?

(र) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

उत्तर–(अ) तुलसी–साहित्य से हमें जन–जागरण और मानव–प्रेम की शिक्षा लेनी चाहिए। साथ ही उससे हमें गम्भीर मानव–सहानुभूति और उच्च विचारों की प्रेरणा लेनी चाहिए।

(ब) तुलसीदास जी के अनुसार हमारे जातीय संगठन के मार्ग में साम्प्रदायिकता, उँच–नीच के भेदभाव, नारी के प्रति सामन्ती शासक का रूख आदि अनेक बाधाएँ हैं।

(स) मानव प्रेम को सक्रिय रूप देना, सहानुभूति को व्यवहार में परिणत करके जनता के मुक्ति–संघर्ष में योग देना हमारा कर्तव्य है।

(द) यह साधारण वाक्य हैं।

(य) साम्प्रदायिकता – सम्प्रदाय मूल शब्द + इक व ता प्रत्यय ।

(र) शीर्षक– तुलसी–साहित्य का महत्व ।

गद्यांश (4)

मनुष्य यन्त्र नहीं है कि जिसके सब कलपुर्जे खोलकर ठीक कर लिए जायेंगे और तेल या ग्रीस लगाकर पुनः चालू कर लिया जायेगा । प्रत्येक मनुष्य विशेष परिस्थितियों में विशेष संस्कारों के साथ उत्पन्न होता है। इन परिस्थितियों और संस्कारों में कुछ अनुकुल हो सकते हैं और कुछ प्रतिकुल। शिक्षालय ऐसे कारखाने हैं जहॉ विषय और प्रभावों का परिमार्जन, सामंजस्य और मानव का विस्तार होता है। दूसरे शब्दों में यहॉ मनुष्य की बुद्धि और ह्रदय खराद पर चढ़ते है और तब नये–नये रूप में समाज के सम्मुख आते हैं । किसी सुन्दर स्वप्न, आदर्श या अनुभूति को दूसरे को देना आसान नहीं होता । यह आदान–प्रदान देने और पान वाले दोनो को धन्य कर देता हैं । हमारी शिक्षा चाहे वह प्राथमिक हो, चाहे उच्च्व, उसने मनुष्य की सम्भावनाओं की ओर कभी ध्यान नहीं दिया ।

प्रश्न (अ) मनुष्य के संस्कारों एवं प्रभावों का परिमार्जन किससे होता है?

(ब) 'मनुष्य यन्त्र मात्र नहीं हैं' इसका आशय समझाइए।

(स) ' खसद' शब्द का मतलब क्या है?

CBEO BHINDER
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

(द) 'इन परिस्थितियों और संस्कारों में कुछ अनुकूल होते है और कुछ प्रतिकूल।' यह किस प्रकार का वाक्य है? स्पष्ट कीजिए।

(य) अनुभूति शब्द में मूल शब्द और प्रत्यय बताइये।

(र) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

उत्तर– (अ) मनुष्य में कुछ जन्मजात संस्कार तथा प्रभाव होते है, उनका अनुकूल परिस्थितियों में ढालने के लिए परिमार्जन करना पड़ता है। यह कार्य शिक्षा से होता है।

(ब) मनुष्य निर्जीव वस्तु नहीं है वह बुद्दि, हृदय और संस्कारों से युक्त होता है।

(स) 'खराद' फारसी शब्द है । यह एक प्रकार का यन्त्र है जो लकड़ी अथवा धातु की बनी हुई वस्तुओं के बडौल अंग छीलकर उन्है सुडौल और चिकना बनाता है।

(द) यह संयुक्त वाक्य है । इसमें 'और' संयोजक अव्यय का प्रयोग किया गया है।

(य) अनुभूति–अनु उपसर्ग + भूत शब्द + इ प्रत्यय।

(र) शीर्षक – शिक्षा का महत्व ।

प्रश्न 2 निम्नलिखित अपठित पद्यांश पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

पद्यांश (1)

जीवन में वह था एक कुसुम,
थे उस पर नित्य निछावर तुम,
वह सुख गया तो सुख गया,
मधुवन की छाती को देखो–
सूखी इसकी कितनी कलियाँ ,
मुरझाई कितनी वल्लरियाँ,
जो मुरझाई फिर कहाँ खिली,

जीवन में मधु का प्याला था,
तुमने तन–मन दे डाला था।
वह टूट गया ता टूट गया,
मदिरालय का आँगन देखो।
कितने प्याले हिल जाते है,
गिर मिटट्टी में मिल जाते है।
जो गिरते है कब उठते है ?
पर बोलो टूटे प्यालों पर
कब मदिरालय पछताता है ?
जो बीत गई सो बात गई।

(क) जीवन में था एक कुसुम में कवि ने कुसुम शब्द का प्रयोग किसके लिए किया है।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

उत्तर –यह कविता व्यक्तिगत तत्वों पर आधारित है जीवन में था एक कुसुम में कुसुम शब्द का प्रयोग कवि की दिवंगत पत्नी के लिए किया गया है।

(ख) –मधुवन किस बात पर शोर नही मचाता है ?

उत्तर –मधुवन अर्थात बाग में अनेक पादप तथा लताएँ होती है। अनेक लताएँ सूख जाती है। फूल मुरझा जाते है परन्तु बाग इस पर रोता– धोता नही है।

(ग)– जो बीत गई सो बात गई–कहकर कवि ने क्या संदेश दिया है ?

उत्तर–जो बीत गई सो बात गई – कहकर कवि ने पुरानी और बीती बातों पर दुखी होना छोड़कर वर्तमान स्थितियों में जावित रहने का संदेश दिया है इसमें संदेश है बीती ताहि बिसारी दे आगे की सुधि लेई।

(घ)– इस काव्यांश में किस शैली का प्रयोग हुआ है ?

उत्तर– इस काव्यांश में कवि ने गीत–शैली का प्रयोग किया है।

(ड.) इस पद्यांश से संसार की नश्वरता को प्रकट करने वाली चार पक्तियाँ छाँटकर लिखिए।

उत्तर – इस पद्यांश में संसार की नश्वरता को व्यक्त करने वाली पंक्तियाँ निम्नलिखित है।

मदिरालय का आँगन देखो
कितने प्याले हिल जाते है।
गिर मिटट्री में मिल जाते है।
जो गिरते है। कब उठते है ?

पद्यांश (2)

नीड़ का निर्माण फिर–फिर
नेह का आह्वान फिर–फिर
वह उठी आँधी की नभ में
छा गया सहसा अँधेरा
धूलि धूसरित बादलों ने
भूमि को इस भाँति घेरा
रात–सा दिन हो गया फिर
रात आई और काली

लग रहा था अब न होगा
इस निशा का फिर सवेरा
रात के उत्पात –भय से
भीत जन–जन भीत कण–कण
कितु प्राची से उषा की
मोहिनी मुस्कान फिर फिर
नीव का निर्माण फिर–फिर
नेह का आह्वान फिर–फिर

(क)– नीड़ का निर्माण फिर–फिर में कौन सा अलंकार है ?

उत्तर –नीड का निर्माण में अनुप्रास अलंकार तथा फिर–फिर में पुनरूक्ति प्रकाश अलंकार है।

(ख)– बार–बार घोंसला बनाने की इच्छा से मनुष्य की किस भावना का पता चलता है ?

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

उत्तर –बार–बार घोंसला बनाने की इच्छा से पता चलता है कि मनुष्य जीवन में आए संकटो से घबराता नही है वह कठिनाईयों और बाधाओं से हार न मानकर निरन्तर आगे बढ़ना चाहता है।

(ग)– आकाश में छाइ आंधी का क्या परिणाम कवि ने चित्रित किया है ?

उत्तर– आकाश में आंधी छा गई इससे दिन में भी अंधेरा छा गया है।

(घ)– प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने क्या संदेश दिया है ?

उत्तर–प्रस्तुत पंक्तियों में मानव जीवन के इस सत्य का चित्रण हुआ है कि जीवन में सुख–दुख, जीत हार आदि आते जाते रहते है। निराशा और पराजय सदा नहीं रहते इन पंक्तियों में आशीर्वाद का संदेश दिया गया है।

(ड)– इस कविता की रचना किस शैली में हुई है ?

उत्तर– इस कविता की रचना गीत शैली में हुई है यह एक गेय रचना है।

(च)– कवि निराश और भयभीत है–यह भाव किन पंक्तियों में व्यक्त हुआ है ?

उत्तर– कवि निराश और भयभीत है – भाव निम्नलिखित पंक्तियों में व्यक्त हुआ है।

लग रहा था अब न होगा
इस निशा का फिर सवेरा।

पद्यांश (3)

ओ हिमानी चीटियों के सजग प्रहरी
तंग सूनी घाटियों के सबल रक्षक, तून एकाकी समझना आपको,
देश तेरे साथ अन्तिम श्वास तक।
तू सिपाही सत्य का स्वातंत्र्य का है,
न्याय का और शांति का है तू सिपाही, प्राण देकर प्राण के ओ प्रबल प्रहरी!
जा रहा तू देश हित बलि पंथ राही!
जा कि तेरे साथ है इस देश का बल,
साथ तेरे देश की हर भावना है, साथ धन जन, साथ तन मन
साथ, तेरी विजय की शुभ कामना है।

प्रश्न (अ) "हिमानी के सजग प्रहरी किसके लिए कहा गया है?
(ब) सिपाही को किसका रक्षक बताया गया है?
(स) प्रस्तुत काव्यांश का केन्द्रीय भाव क्या है? बताइए।
(द) "जा कि तेरे साथ है" सिपाही के साथ कौन है?

CBEO BHINDER
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

(य) 'साथ धन जन, साथ तन मन' इस पंक्ति में कौनसा अलंकार है?

(र) इस काव्यांश में किसका चित्रण किया गया है?

उत्तर-(अ)प्रस्तुत काव्यांश में देश की सीमाओं की रक्षा करने वाले सैनिकों को सजग प्रहरी कहा गया है।

(ब) सिपाही को केवल मातृभूमि की सीमाओं का ही नहीं, अपितु देश की स्वतन्त्रता, न्याय और शांति का भी रक्षक बताया गया है।

(स) इसका केन्द्रीय भाव यह है कि देश की रक्षा के लिए सिपाही अपने प्राणों की बाजी लगा देते हैं अतः उनके प्रति देशवासियों को कृतज्ञता व्यक्त करनी चाहिए।

(द) सीमाओं की रक्षा करने वाले सिपाही के साथ देशवासियों की ओजस्वी भावनाएँ, आत्म बल, सभी का तन- मन-धन और शुभकामनाएँ हैं।

(य) इस पंक्ति में अनुप्रास अलंकार है।

(र) इस काव्यांश में देश की रक्षा के लिए अनेक कठिनाइयों को झेलते हुए अपने प्राणों की बाजी लगाने वाले सैनिक का चित्रण किया गया है।

पद्यांश (4)

ऊँची हुई मशाल हमारी
आगे कठिन डगर है,
शत्रु हट गया, लेकिन उसकी
छायाओं का डर है।
शोषण से मृत है समाज
कमजोर हमारा घर है,
किन्तु आ रही नयी जिन्दगी
यह विश्वास अमर है।
जन-गंगा में ज्वार,
लहर तुम, प्रवहमान रहना
पहरुए, सावधान रहना।

प्रश्न- (अ) "आगे कठिन डगर है" इससे क्या आशय है?

(ब) शोषण से मृत समाज का उद्धार कैसे हो सकता है?

(स) जन-गंगा में ज्वार" कवि ने ज्वार किसे कहा है और क्यों?

(द) यह विश्वास अमर है" इस पंक्ति में कवि का क्या आशय है?

(य) कमजोर हमारा घर है इसका तात्पर्य क्या है?

(र) 'शत्रु हट गया, लेकिन उसकी छायाओं का डर है। इसका भावार्थ क्या है?

CBEO BHINDER
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

उत्तर- (अ) इसका आशय यह है कि देश को सदियों की गुलामी के बाद आजादी मिली है, परन्तु आगे इसकी प्रगति का मार्ग कुछ कठिन है।

(ब) शोषण से ग्रस्त समाज का उद्धार परस्पर समानता सहयोग तथा सहभागिता के द्वारा हो सकता है, जन-कल्याणकारी नीतियों से हो सकता है।

(स) 'ज्वार से कवि का आशय जनता में जोश उत्साह गतिशीलता और उद्यमिता है; क्योंकि समाज एवं राष्ट्र की कमजोरियां तभी दूर हो सकती है जब जनता सावधान एवं कर्तव्यनिष्ठ रहे।

(द) कवि का आशय है कि नव स्वतन्त्र भारत यद्यपि आर्थिक दृष्टि से कमजोर है, परन्तु इसकी प्रगति विकास और खुशहाली के लिए सभी प्रयासरत हैं।

(य) हमारा देश आर्थिक रूप से बहुत विपन्न है।

(र) शत्रु अर्थात् हमें गुलाम बनाने वाले अंग्रेज चले गए हैं पर उनकी छाया के रूप में विद्यमान छद्म यहाँ कमी नहीं है। हमें उनका डर है।

प्रश्न 3 **निबन्ध (शीर्षक)**

1 **कोरोना वायरस – 21वीं सदी की महामारी**

2 **मेक इन इण्डिया अथवा स्वदेशी**

3 **स्वास्थ्य रक्षा : आयुष्मान योजना**

4 **आधुनिक सूचना– प्रौद्योगिकी**

5 **नारी– सशक्तिकरण**

CBEO BHINDER

प्रश्न 4 कार्यालय निदेशक राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान जयपुर की ओर से आवश्यक मशीन उपकरण सप्लाई हेतु एक निविदा सूचना लिखिए?

उत्तर–

राजस्थान सरकार

कार्यालय निदेशक राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान जयपुर

कमांकः–472 **दिनांकः– 14.01.2021**

निविदा सूचना

राजस्थान के माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों कम्प्यूटर अन्य उपकरण सप्लाई हेतु पंजीकृत कम्पनी से दिनांक 25.01.2021 तक निविदाएं आमंत्रित की जाती है। प्राप्त निविदाएं दिनांक 27.01.2021 को प्रातः 10 बजे उपस्थित निविदा दाताओं के समक्ष खोली जाएगी। विवरण इस प्रकार हैः–

क.सं.	कार्य विवरण	अनुमानित लागत (करोड़)	धरोहर राशि (लाख)	अवधि

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

1.	कम्प्यूटर मय प्रिंटर सीपीयू व अन्य सामग्री	42.00	20.5	3 माह
2.	फोटो स्कैनर मशीन	6.00	3.00	1 माह
3.	लेपटॉप	1.00	0.50	1 माह

शर्तें:–

(1) निविदा को निरस्त करने का सम्पूर्ण अधिकार अधोहस्ताक्षर कर्ता के पास सुरक्षित रहेगा।

(2) समस्त न्यायिक विवादों का परिक्षेत्र जयपुर रहेगा।

हस्ताक्षर
निदेशक आयुक्त

प्रश्न 5 सचिव, राजस्तरीय पाठ्य–पुस्तक मण्डल की ओर से एक निविदा सूचना का प्रारूप तैयार कीजिए, जिसमें फर्नीचर एवं स्टेशनरी कय करने का विवरण हो।

उत्तर–

निविदा–सूचना

राज्यस्तरीय पाठ्य–पुस्तक मण्डल,

झालाना सांस्थानिक क्षेत्र, जयपुर

कमांक– लेखा / नि.सू. / 20XX–15

दिनांक 12 नवम्बर, 20XX

निविदा संख्या 17 / 20XX

अधोहस्ताक्षरकर्त्ता द्वारा इस वृत्त के कार्य हेतु निम्न विवरणानुसार सामान की आपूर्ति हेतु प्रतिष्ठित निर्माताओं / प्रतिष्ठानों से निविदाएँ आमंत्रित की जाती हैं जो निर्धारित तिथियों को दोपहर दो बजे तक प्राप्त की जायेंगी तथा उसी दिन तीन बजे इच्छुक निविदाकारों के समक्ष खोली जायेंगी। निविदा–प्रपत्र निविदा खोलने की निर्धारित तिथि के 12 बजे तक निविदा शुल्क तथा धरोहर राशि का रेखांकित बैंक ड्राफ्ट लेखा अधिकारी राज्यस्तरीय पाठ्य–पुस्तक मण्डल, जयपुर के कार्यालय में जमा कराकर उपलब्ध किया जा सकता है। निविदा–विवरण इस प्रकार है–

CBEO BHINDER

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

विवरण	अनुमानित राशि	धरोहर राशि	निविदा खोलने की तिथि	निविदा प्रपत्र–शुल्क
1. स्टील फर्नीचर की आपूर्ति हेतु	चार लाख रु. लगभग	8000/–	15/11/20XX	100/–
2. स्टेशनरी आइटम की आपूर्ति हेतु	एक लाख तीस हजार रु. लगभग	2500/–	15/11/20XX	50/–

नोट– आपूर्ति के लिए सामग्री का पूरा विवरण निविदा–प्रपत्र के साथ उपलब्ध रहेगा।

हस्ताक्षर सचिव

प्रश्न 6 कार्यालय सदस्य सचिव, राजस्थान मेडिकेयर रिलीफ सोसायटी, बूँदी की ओर से आवश्यक मशीन–उपकरण खरीदने हेतु एक निविदा–सूचना लिखिए।

उत्तर–

निविदा–सूचना

कार्यालय सदस्य सचिव,

राजस्थान मेडिकेयर रिलीफ सोसायटी, बूँदी

क्रमांक नि.ले/2021/104
दिनांक 28 अक्टूबर, 2021

अल्पकालीन निविदा–सूचना संख्या 05/2021

प्रधानमंत्री स्वास्थ्य–योजनान्तर्गत राजकीय जिला चिकित्सालय, बूंदी हेतु निम्नांकित उपकरणों के क्रय हेतु सीलबन्द निविदाएँ आमंत्रित की जाती हैं–

क्र. सं.	नम उपकरण	मात्रा लागत	अनुमानित राशि	धरोहर प्रपत्र शुल्क	निविदा
	एक्सरे मशीन 800 एम.ए.	1	50 लाख	50000/–	100/–
	टी. एम. सी. मशीन	1	80 लाख	22000/–	100/–

CBEO BHINDER
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

	पल्स आक्सीमीटर मय हार्ट रेट	1	50 हजार	2000/–	50/–

निविदा प्रपत्र कार्यालय से निर्धारित शुल्क जमा कराकर प्राप्त किये जा सकते हैं तथा दिनांक 10/11/2021 को दोपहर बाद 2.30 बजे तक कार्यालय में जमा कराये जा कसते हैं। निविदाएं उपस्थित निविदाकर्त्ताओं के समक्ष क्रय समिति द्वारा दिनांक 10/11/2021 को ही अपराह्न 4.00 बजे खोली जायेंगी।

निविदा को बिना कारण बताये स्वीकार/अस्वीकार करने का पूर्ण अधिकार निम्न–हस्ताक्षरकर्त्ता को प्राप्त रहेगा।

मुख्य चिकित्सा अधिकारी एवं सदस्य सचिव

राज्य. मेडि. सोसायटी, बूँदी

प्रश्न 7 राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर की ओर से एक विज्ञप्ति प्रारूप तैयार कीजिए, जिसमें परीक्षाओं की तारीख परिवर्तित करने की सूचना दी गई हो।–

उत्तर–

विज्ञप्ति
राजस्थान विश्वविद्यालय
जयपुर

क्रमांकः–229 **दिनांकः–12.03.2022**

विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित एम.ए.,एम.कॉम. व एम.एस.सी. की लिखित परीक्षाएँ 15 मार्च 2022 से ली जाने वाली थी किन्तु अपरिहार्य कारणों सेअब 20 मार्च 2022 से आयोजित होगी।

परीक्षार्थी अपना प्रवेश–पत्र विश्वविद्यालय की वेबसाइट से डाउनलोड कर सकते है अथवा सम्बधित महाविद्यालय जो सम्पर्क कर सकते है।

हस्ताक्षर
परीक्षा नियंत्रक

CBEO BHINDER

प्रश्न 8 राजस्थान में अकाल की विभीषिका को देखते हुए, गृह मंत्रालय की ओर से समस्त विभागों हेतु कार्यालय ज्ञापन का प्रारूप तैयार कीजिए–

राजस्थान सरकार
गृह मंत्रालय जयपुर

ज्ञा.सं. :–16(अ)/142 **दिनांकः–03.05.2022**

विषयः– जनसमस्याओं के निवारण बाबत्

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

समस्त विभागाध्यक्षों को सूचित किया जाता है कि राजस्थान में अकाल की विभीषिका से त्रस्त जनता की विविध समस्याओं का त्वरित निस्तारण आवश्यक है। अतः प्रशासन अपनी भूमिका का पूर्ण निष्ठा से निर्वहन करे।

सेवामें,

1. समस्त मंत्रालय, राजस्थान सरकार

2. समस्त विभागाध्यक्ष

3. समस्त जिला कलक्टर

हस्ताक्षर
क,ख,ग
उपशासन सचिव

. प्रश्न 9 अधिसूचना का एक प्रारूप तैयार कीजिए–
उत्तर–

राजस्थान सरकार
राजस्व विभाग, शासन सचिवालय, जयपुर

पत्रांक–4(स)/20/3/2020 **दिनांकः–15.10.2021**

<u>अधिसूचना</u>

राजस्थान सरकार द्वारा आयोजित प्रशासन गाँवों की ओर 2021 के अन्तर्गत जारी मूल निवास एवं जाति प्रमाण–पत्र पर हस्ताक्षर हेतु तहसीलदार अधिकृत होंगे। यह अधिसूचना 31 दिसम्बर 2021 अथवा अभियान संचालित होने तक जो भी पहले हो, प्रभावी रहेगी।

हस्ताक्षर
(अ,ब,स)
उपशासन सचिव

प्रतिलिपि सूचनार्थ–

1. निजी सचिव, माननीय मुख्यमंत्री, राजस्थान जयपुर।

2. निजी सचिव, मुख्य सचिव, राजस्थान जयपुर।

3. सचिव, राजस्व विभाग, जयपुर।

CBEO BHINDER

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

4. समस्त जिला कलक्टर।
5. निदेशक, राजकीय मुद्रणालय, निमित राजपत्र में प्रकाशनार्थ।

हस्ताक्षर
(अ,ब,स)
उपशासन सचिव

<u>अर्द्धशासकीय पत्र</u>

प्रश्न 10. जिला कलेक्टर, उदयपुर की ओर से राजस्व सचिव, राजस्थान सरकार को स्वच्छता अभियान हेतु बजट स्वीकृति जारी करने हेतु सरकारी पत्र लिखिए।

उत्तर–

प्रेषक–

जिला कलेक्टर,
कलेक्टर– कार्यालय,
उदयपुर

प्रेषित– श्रीमान् राजस्व सचिव महोदय,
शासन सचिवालय, राजस्थान सरकार,
जयपुर

पत्रांक – 28 / 08 / 20XX दिनांक
05सितम्बर,20XX

विषय– स्वच्छता अभियान हेतु बजट स्वीकृति जारी करने के सम्बन्ध में।

प्रियश्री ....

CBEO BHINDER

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

आप इस तथ्य से भली–भॉति परिचित हैं कि प्रधानमंत्री स्वच्छता अभियान के अन्तर्गत 'खुला–शौचमुक्त गॉव'कार्यक्रम जिला स्तर पर 'स्वच्छ ग्रामीण मिशन' एवं ग्राम–पंचायतों के माध्यम से चलाया जा रहा है । इस कार्यक्रम हेतु बजट स्वीकृति जारी करने का कष्ट करें, ताकि 'खुला–शौचमुक्त गॉव' कार्यक्रम को आगे बढ़ाने में गति दी जा सके।

भवदीय

(ह. ....)
वी.एस.पाल
जिला कलेक्टर, उदयपुर

प्रश्न 11. पेयजल की आपुर्ति के सम्बन्ध में विशिष्ट शासन सचिव की ओर से अजमेर मण्डलायुक्त को एक अर्द्ध–सरकारी पत्र लिखिए, जिसमें पूर्ण विवरण भेजने के लिए निर्देश हो।

उत्तर–

प्रेषक–

विशिष्ट शासन सचिव,

स्वायत्त शासन विभाग,

राजस्थान सरकार,

शासन सचिवालय, जयपुर।

प्रेषिति–

श्रीमान् मण्डलायुक्त,

अजमेर।

पत्र संख्या : 403/2/20XX

जयपुर, 15 मई, 20XX

प्रिय राठौड़जी,

CBEO BHINDER
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

कृपया मेरे अर्द्ध–सरकारी पत्र संख्या 202/2/सं. 20XX, दिनांक 4 अप्रैल, 20ττ पर ध्यान दीजिए, जिसमें राज्य सरकार द्वारा अजमेर मण्डल के सभी जिलों में पेयजल की उचित आपूर्ति के लिए आवश्यक कार्यवाही करने का निर्देश दिया गया था। गर्मी का मौसम आने से पूर्व सरकार इस समस्या का समाधान करना चाहती है, परन्तु जब तक प्रत्येक जिले के लिए पेयजल आपूर्ति की योजना, व्यय–भार एवं अन्य विवरण उपलब्ध नहीं हो जावे, तब तक सरकारी प्रयास रुक रहेंगे। अतः आप अपने क्षेत्र की पूरी जानकारी यथाशीघ्र भेजने की कृपा करें। इसके लिए अलग–अलग बिन्दुओं का सांख्यिकीय विवरण तथा अनुमानित व्यय आदि की रूपरेख भेजनी नितान्त अपेक्षित है।

भवदीय

(हस्ताक्षर ....)
शिवपाल सिंह राजावत
विशिष्ट शासन सचिव

CBEO BHINDER

प्रश्न 12 जनसंचार के प्रमुख माध्यम कौन–कौन से है। इन माध्यमों में समाचारों के लेखन और प्रस्तुति में क्या प्रमुख अन्तर है?

उत्तर– जनसंचार के प्रमुख माध्यम है– प्रिंट, टी.वी. रेडियों और इंटरनेट इन सभी माध्यमों में समाचार की लेखन शैली और प्रस्तुति में अन्तर है। अखबार पढ़ने के लिए, रेडियों सुनने के लिए और टी.वी. देखने के लिए होता है पर इंटरनेट पर पढ़ने सुनने और देखने तीनों की सुविधा है।

प्रश्न 13 जनसंचार का सबसे पुराना माध्यम क्या है? इसके अन्तर्गत क्या–क्या माध्यम आते है।

उत्तर–जनसंचार का सबसे पुराना स्वयं मनुष्य है पौराणिक काल के देवर्षि नारद को प्रथम समाचारवाचक माना जाता सकता है। महाभारतकाल में संजय की परिकल्पना भी अत्यन्त समृद्ध संचार व्यवस्था को इंगित करती है। कालान्तर में जनभावानाओं को राजदरबार तक पहुँचाने और राजा का संदेश जनता तक पहुँचाने हेतु प्रयोग किया गया शिलालेख व पट्टिका का प्रयोग, गुफा चित्र, विविध नाट्य रूपों, कथावाचन, बाउल, सांग रागनी, तमाशा, लावनी नौटंकी मात्रा गंगा गौरी एवं वाक्ष गान आदि इसी माध्यम के आते है।

.प्रश्न 14 आधुनिक युग में जनसंचार का सबसे पुराना माध्यम क्या है?

उत्तर– प्रिंट अर्थात् मुद्रित माध्यम जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में सबसे पुराना है। आधुनिक युग का प्रारम्भ ही मुद्रण या छपाई के आविष्कार से हुआ। यद्यपि मुद्रण का प्रारम्भ चीन में हुआ पर आज हम जिस छापेखाने(प्रेस) को देखते है इसका श्रेय जर्मनी के गुटेनवर्ग को है।

प्रश्न 15 उल्टा पिरामिड शैली की विशेषताएँ बताइये।
उत्तर– उल्टा पिरामिड शैली की निम्न विशेषताएँ है–

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

(I) उल्टा पिरामिड शैली में समाचार का महत्वपूर्ण तथ्य सबसे पहले लिखा जाता है उसके बाद घटते हुए महत्वक्रम में अन्य सूचनाओं या तथ्यों को लिखा जाता है।

(II) इस शैली में झटना/विचार/समस्या का विवरण कालक्रम के अनुसार न होकर महत्व के आधार पर शुरू होता है।

(III) पिरामिड शैली का चरमोत्कर्ष अन्त में न होकर शुरू मे ही आ जाता है।

(IV) इस शैली में कोई निष्कर्ष नहीं होता है।

.प्रश्न 16 उल्टा पिरामिड शैली में समाचार के कितने हिस्से होते है उनके बारे में आप क्या जानते है?

उत्तर– उल्टा पिरामिड शैली में समाचार के तीन हिस्से होते है–

1. इंट्रों 2. बॉडी 3.समापन

समाचार के इंट्रों को लीड या हिन्दी में मुखड़ा भी कहते है यह खबर का मूल तत्व होता जिसे प्रथम दो या तीन पंक्तियों में बताया जाता है।

बॉडी में समाचार का विस्तृत ब्यौरा दिया जाता है जो घटते हुए महत्वक्रम में दिया जाता है इस शैली में समापन जैसी कोई चीज नहीं होती।

.प्रश्न 17 टी.वी. में सूचनाओं के कितने चरण होते है?

उत्तर– टी.वी. में सूचनाओं के सात चरण होते है–

1. फ्लैश या ब्रेकिंग न्यून
2. ड्राई–एंकर
3. फोन–इन
4. एंकर–विजुअल
5. एंकर बाइट
6. लाइव
7. एंकर–पैकेज

प्रश्न 18 फोन–इन का क्या आशय है?

उत्तर–टी.वी. में सूचनाओं के दूसरे चरण ड्राई–एंकर के पश्चात् समाचार का विस्तार होता है। एंकर घटना स्थल पर उपस्थित संवाददाता से फोन पर बात करके सूचनाओं को दर्शकों तक पहुँचाता है। इसमें रिपोर्टर घटनास्थल पर मौजुद रहता है तथा घटना–स्थल से जो भी जानकारी मिलती है रिपोर्टर उन्हे ज्यादा से ज्यादा दर्शकों तक पहुँचाता है।

प्रश्न 19 इंटरनेट क्या है?

उत्तर– इंटरनेट जनसंचार का सबसे नया पर तेजी से लोकप्रिय हो रहा माध्यम है यह ऐसा माध्यम है जिसमें प्रिंट मीडिया, रेडियों, टेलीविजन, किताब, सिनेमा यहाँ तक कि पुस्तकालय के सारे गुण है उसकी पहुँच दुनिया के कोने–कोने तक है उसमें जनसंचार के सभी माध्यमों का समापन है।

.प्रश्न 20 इंटरनेट पत्रकारिता से आप क्या समझते है?

उत्तर–इंटरनेट पर समाचार–पत्रों का प्रकाशन या समाचारों के आदान प्रदान की इंटरनेट पत्रकारिता कहते है। इंटरनेट पर किसी भी रूप के समाचारों लेखों, चर्चा परिचर्चाओं, बहसों फीचर झलकियों के माध्यम से यदि हम अपने समय की धड़कनों को अनुभव करने का काम करते है तो यही इंटरनेट पत्रकारिता है।

.प्रश्न 21 हिन्दी में नेट पत्रकारिता का प्रारंभ किस प्रकार हुआ?

उत्तर– हिन्दी में नेट पत्रकारिता वेब दुनिया के साथ शुरू हुई। इंदौर की नई दुनिया समुह से शुरू हुआ यह पोर्टल हिन्दी का सम्पूर्ण पोर्टल है हिन्दी के निम्नलिखित समाचार–पत्रों में इंटरनेट की सुविधा है जागरण, अमर उजाला, नयी दुनिया हिन्दुस्तान भास्कर, राजस्थान पत्रिका, नवभारत टाइम्स, राष्ट्रीय सहारा आदि। प्रभासाक्षी अखबार प्रिंट रूप न होकर सिर्फ इंटरनेट पर उपलब्ध है पत्रकारिता की दृष्टि से बी बी सी की सर्वश्रेष्ठ साइट है।

CBEO BHINDER

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

. प्रश्न 22 फिचर लेखन/आलेख :–

आतंकवाद

वाद विचार को कहते है दूसरो को आंतकित करने का विचार ही आतंकवाद है वैसे आतंकवाद को विचार कहना ही ठीक नहीं है। किसी भी विचारधारा में दूसरो को सताने की बात मान नही है। आतंकवाद एक विश्वव्यापी समस्या है कुछ लोग बिना किसी कारण के दूसरो को डराना धमकाना सताना और हत्या करना जैसे अमानवीय कार्य करते है आज आतंकवाद का जन्म इस्लामिक उग्रवाद से हुआ है। लादेन आतंकवाद का जन्मदाता एवं संगठनकर्ता रहा है अमेरिका, भारत, पाकिस्तान, रूस, नेपाल आदि में आतंकवादी घटनाएँ हो चुकी है आतंकवाद मानवता के लिए खतरा है भारत के कुछ पथभ्रष्ट युवक भी विदेशी इशारे पर अपने ही देश में आतंक फैला रहे है कुछ राजनेता अपनी स्वार्थ सिध्दी के लिए आतंकवाद को सरक्षंण दे रहे है आतंकवाद का दमन कठोरता से करना जरूरी है।

रोजगारोन्मुखी शिक्षा की आवश्यकता

शिक्षा मानव जीवन के लिए आवश्यक है। बच्चों को कैसी शिक्षा दी जाय यह प्रश्न बहुत समय से लोगों के सामने रहा है। प्राचीन काल में भारत में शिक्षा का उद्देश्य आत्मसाक्षात्कार माना जाता था। वही शिक्षा उत्तम समझी जाती थी जो व्यक्ति को आत्मा से परिचित करा सके। वर्तमान में शिक्षा का उद्देश्य बदल चुका है। आज मनुष्य का ध्यान न आत्मा के विकास की और है और न परमात्मा के साक्षात्कार की और है न ही चरित्र निर्माण की ओर। आज तो ऐसी शिक्षा अच्छी समझी जाती है जो धनोपार्जन में मदद कर सके येनकेन प्रकारेण धन कमाना ही जीवन का लक्ष्य बन चुका है। आज व्यावसायिक शिक्षा की आवश्यकता है। आज लोगों को ऐसी शिक्षा चाहिए जो कोई रोजगार सीखा सके रोजगार शिक्षा के लिए अनेक शिक्षण संस्थाएँ खुल चुकी है। इनके संचालक लूट मचाए हुए है।इनमें प्रवेश पाने वालो की भीड़ इनके दरवाजो पर लगी रहती है। समाज में लोगों की आवश्यकताएँ बढ़ रही है।

.प्रश्न 23 भाषा किसे कहते है?

उत्तर– विचार विनिमय के मौखिक एवं लिखित माध्यम को भाषा कहते है।

प्रश्न 24 हिन्दी भाषा की कौनसी लिपि है?

उत्तर– हिन्दी भाषा की देवनागरी लिपि है।

प्रश्न 25 लिपि किसे कहते है?

उत्तर– भाषा को लिखने के लिए जिन ध्वनि–चिन्हों या लेखन चिन्हों का प्रयोग किया जाता है उसे लिपि कहते है।

प्रश्न 26 भाषा की कितनी इकाइयाँ होती है?

उत्तर– पांच इकाइयाँ– ध्वनि, वर्ण, शब्द, पद, वाक्य।

प्रश्न 27 भाषा और बोली में क्या अन्तर है?

उत्तर– सीमित क्षेत्र में बोली जाने वाली कम विकसित बोलचाल की भाषा बोली कही जाती है तथा व्यक्त वाणी के रूप में जिसकी अभिव्यक्ति की जाती है उसे भाषा कहते है।

.प्रश्न 28 भारत की प्राचीन लिपियाँ कौन–कौनसी थी?

उत्तर– ब्राह्मी और खरोष्ठी

.प्रश्न 29 भाषा की सबसे छोटी इकाई है–

CBEO BHINDER
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

(अ) वर्ण (ब) शब्द (स) पद (द) वाक्य **(अ)**

.प्रश्न 30 भाषा के चिन्हों को प्रकट करने का माध्यम है—

(अ) ध्वनि (ब) लिपि (स) व्याकरण (द) वाक्य **(ब)**

प्रश्न 31रिक्त स्थान की पूर्ति करजिए—

(i) हमारे मुँह से निकलने वाली प्रत्येक स्वतंत्र आवाज **ध्वनि** कहलाती है। (भाषा/ध्वनि)

(ii) हिन्दी **देवनागरी** लिपि में लिखी जाती है। (देवनागरी/खरोष्ठी)

प्रश्न 32 व्याकरण किसे कहते है?

उत्तर— जिसके द्वारा भाषा को शुद्ध बोलने और लिखने का ज्ञान होता है, व्याकरण कहते है।

प्रश्न 33 ध्वनि किसे कहते है?

उत्तर— मुख से निकलने वाली वाग्यन्त्र से उच्चरित प्रत्येक स्वतंत्र आवाज को ध्वनि कहते है।

प्रश्न 34भाषा के कौनसे दो रूप है?

उत्तर— (1) मौखिक भाषा (2) लिखित भाषा

प्रश्न 35शब्द शक्ति की परिभाषा लिखिए?

उत्तर—शब्द के अर्थ को जिस माध्यम से ग्रहण किया जाता है, वह माध्यम शब्द शक्ति कहलाता है।

प्रश्न 36 शब्द शक्ति कितने प्रकार की होती है? नाम लिखिए

उत्तर—तीन प्रकार की होती है—

(1) अभिधा शब्द शक्ति

(2) व्यंजना शब्द शक्ति

(3) लक्षणा शब्द शक्ति

प्रश्न 37 अभिधा शब्द शक्ति को उदाहरण सहित समझाइये?

उत्तर— वाक्यार्थ (मुख्यार्थ) का बोध कराने वाली शक्ति को अभिधा शब्द शक्ति कहा जाता है।

अभिधा का संबंध शब्द का एक ही अर्थ ग्रहण करने से है।

उदाहरण— (1) किसान फसल काट रहा है।

(2) बिल्ली भाग रही है।

(3) राजस्थान की राजधानी जयपुर है।

प्रश्न 38 व्यंजना शब्द शक्ति को उदाहरण सहित समझाइये?

उत्तर—जब वाक्यार्थ (मुख्यार्थ) लक्ष्यार्थ (लक्ष्य) और संकेतिक अर्थ के पश्चात् जब किसी विलक्षण अर्थ की प्रतीति होती है, उसे व्यंग्यार्थ कहते है। जिस शब्द शक्ति से व्यंग्यार्थ का बोध होता है उसे व्यंजना शब्द शक्ति कहते है।

उदाहरण—(1) उसने कहा— "संध्या हो गई"।

CBEO BHINDER

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

(2) दस बज गए।

.प्रश्न 39 लक्षणा शब्द शक्ति को सोदाहरण समझाइये?

उत्तर– जब शब्द के शब्दार्थ (वाक्यार्थ) का अतिक्रमण कर लक्षणों के आधार पर किसी दूसरे अर्थ को ग्रहण किया जाता है, तब उसे लक्ष्यार्थ कहते है। व लक्ष्यार्थ का बोध कराने वाली शक्ति को लक्षणा शब्द शक्ति कहा जाता है।

उदाहरण–(1) वहाँ लाठियाँ चल रही है।

(2) कश्मीर रक्त में डूबा हुआ है।

.प्रश्न 40 निविदाएं कितने प्रकार की होती है?

उत्तर– निविदाएं दो प्रकार की होती है:–

(1)सीमित निविदा।

(2) खुली निविदा।

.प्रश्न 41 ज्ञापन किसे कहते है?

उत्तर– शासकीय पत्र व्यवहार में जब किसी सक्षम अधिकारी द्वारा समकक्ष या अधीनस्थ कर्मचारियों अथवा कर्मचारियों को सामान्य सूचना, संदेश आदि देने के लिए जो पत्र लिखा जाता है उसे कार्यालय ज्ञापन कहते है।

.प्रश्न 42 अधिसूचना किसे कहते है?

उत्तर–केन्द्र तथा राज्य सरकार जब सरकारी आदेशों को आम जनता हेतु प्रसारित करती है तो इन सूचनाओं को वैधानिक दृष्टि से अधिसूचना कहा जाता है।

CBEO BHINDER

अलंकार

प्रश्न 43. काागा काको धन हरै, कोयल काको देय।

मीठा शब्द सुनाय के, जग अपनो करि लेय।।

इसमें कौन–सा अलंकार है? उसकी परिभाषा भी लिखिए।

उत्तर– इसमें अनुप्रास अलंकार है, क्योंकि इसमें 'क' वर्ण की आवृत्ति हुई है।

परिभाषा– जहाँ एक या अनेक वर्ण आवृति होती है, अर्थात् किसी वर्ण का एकाधिक बार कमानुसार प्रयोग होता है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

प्रश्न 44. 'मैं स्नेह–सुरा का पान किया करता हूँ।'

इस पंक्ति में कौन–सा अलंकार है? लक्षण भी लिखिए।

उत्तर– इस पंक्ति में रूपक अलंकार है, क्योंकि इसमें स्नेह पर सुरा का आरोप किया गया है।

लक्षण– जहाँ उपमेय पर उपमान का अभेदात्मक आरोप किया जावे, अर्थात् दोनों को एक ही मान लिया जावे, वहाँ रूपक अलंकार होता है।

प्रश्न 45. "हँसने लगे तब हरि अहा! पूर्णेन्दु–सा मुख खिल गया।"

इसमें कौनसा अलंकार है? लक्षण लिखिए।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

उत्तर– इसमें उपमा अलंकार है।

लक्षण– जहाँ उपमेय को किसी गुण, धर्म आदि के आधार पर उपमान के समान बताया जावे, वहाँ उपमा अलंकार होता है। यहाँ पर उपमेय 'मुख' को उपमान चन्द्रमा के समान बताया है।

प्रश्न 46 सोहत ओढ़े पीत पट, स्याम सलोने गात।

मनहुँ नीलमनि सैल पर, आतप पर्यौ प्रभात।।

इसमें कौन–सा अलंकार है और क्यों?

उत्तर– इसमें उत्प्रेक्षा अलंकार है। जहाँ उपमेय में उपमान की सम्भावना व्यक्त की जावे, अर्थात् उपमान का सम्भावनात्मक वर्णन हो, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है और 'मनहुँ' उत्प्रेक्षावाचक शब्द का प्रयोग किया है।

प्रश्न 47. यमक और श्लेष अलंकारों का अन्तर सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– यमक अलंकार में शब्द या शब्दों की उसी क्रम में आवृत्ति होती है। जैसे– ''कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय।'' इसमें 'कनक' शब्द की आवृत्ति भिन्न अर्थ में हुई है।

श्लेष अलंकार में शब्द एक बार ही आता है, परन्तु उसके दो–तीन अर्थ निकलते हैं; जैसे– ''पानी गये न ऊबरे मोती मानुष चूने।'' इसमें 'पानी' शब्द का मोती के साथ चमक, मनुष्य के साथ इज्जत और चून के साथ जल अर्थ है। अतः अनेकार्थ शब्द के प्रयोग से श्लेष अलंकार होता है।

अन्तर– यमक में शब्द या शब्दों की आवृत्ति होती है, जबकि श्लेष में शब्द एक ही रहता है तथा उसके अनेक अर्थ निकलते हैं।

48. परिभाषिक शब्दावली :–

1	Apology	क्षमायाचना
2	Adhoc	तदर्थ
3	Administration	प्रशासन
4	Allowance	भत्ता
5	Ability	योग्यता
6	Abalation	उन्मूलन / समाप्ति
7	Absence	अनुपस्थित
8	Act	अधिनियम
9	Affidavit	शपथ पत्र
10	Agreement	अनुबन्ध
11	Appointment	नियुक्ति
12	Backlog	पिछला बकाया
13	Bill	विधेयक
14	Brief	संक्षिप्त, पक्षकार
15	Balance	शेष
16	Bribe	घूस / रिश्वत
17	Business	व्यवसाय

CBEO BHINDER

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

18	Ballot	**मतपत्र**
19	Cabinet	मंत्रिमण्डल
20	Currency	मुद्रा
21	Census	जनगणना
22	Chairman	अध्यक्ष
23	Corruption	भ्रष्टाचार
24	Cashmemo	**नगद-पत्र**
25	Commission	**आयोग**
26	Demonstration	**प्रदर्शन**
27	Deed	विलेख
28	Dialogue	संवाद
29	Data	आँकडे
30	Deposit	जमा
31	Deputation	प्रतिनियुक्ति
32	Entry	प्रविष्टि
33	Economy	अर्थव्यवस्था
34	Enquiry	जांच, पूछताछ
35	Evaluation	मूल्यांकन
36	Editing	सम्पादन
37	Eligibility	पात्रता
38	Explusion	**व्याख्यात्मक**
39	Fare	किराया
40	Fake	नकली
41	Financial	वित्तीय
42	Face value	**अंकित मूल्य**
43	Gazetted	राजपत्रित
44	Grant	अनुदान
45	Hast	आतिथेय / परितोषी
46	Honorary	अवैतनिक
47	Identity	पहचान
48	Inspection	निरीक्षण
49	Illegal	अवैध
50	Judgement	निर्णय
51	Justice	न्याय
52	Logo	प्रतीक चिन्ह
53	Ledger	खाता
54	Layout	**पट्टा**
55	Manager	प्रबंधक

CBEO BHINDER

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

56	Mob	भीड़
57	Memo	ज्ञापन
58	Nation	राष्ट्र
59	Native	मूल निवासी
60	Nutrition	पालन–पोषण
61	Nomination	**नामांकन**
62	Occupation	व्यवसाय
63	Post pone	स्थगित करना
64	Pact	समझौता
65	Provisional	**अस्थायी, अंतिम**
66	Quit	छोड़ना
67	Rescue	बचाव
68	Random	यादृच्छिक
69	Salary	वेतन
70	Seminar	संगोष्ठी
71	Tally	मिलान करना
72	Verification	सत्यापन
73	Zerohour	शून्यकाल

.प्रश्न 49 निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

गद्यांश (1)

अंधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी। निस्तब्धता करूण सिसकियों और आहों को बलपूर्व अपने ह्रदय में ही दबाने की चेष्टा कर रही थी। आकाश में तारे चमक रहे थे। पृथ्वी पर कहीं प्रकाश का नाम नहीं। आकाश से टुटकर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना भी चाहता है तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में हीं शेष हो जाती थी। अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पड़ते थे।

प्रसंगः– लेखक हैजे की महामारी से पीडित गाँव की एक ठंडी अंधेरों को डराने वाली रातों का वर्णन कर रहा है

व्याख्या :– जाड़े के दिन चल रहे थे। गाँव पर अमावस्या की ठंडी और काली रात छाई हुई थी। गाँव में मलेरिया और हैजे की बिमारियाँ फैली हुई थी। बिमारियों से भयभीत लोग, एक डरे हुए बच्चे की भाँति घर–घर काँप रहे थे। गाँव में पुरानी और खाली घास–फूँस की झोपड़ियाँ थी। उसमें घोर अंधकार और सन्नाटा छाया हुआ था। कही से कोई आवाज सुनाई नहीं पड़ रही थी। घोर सन्नाटा पीड़ित ग्रामवासियों की करूणा भरी सिसकियों और दुख भरी कराहों को बाहर प्रकट नहीं होने देना चाह रहा था। अमावस्या की उस काली–काली रात में तारे चम–चमा रहे थे। धरती पर प्रकाश की एक किरण भी नजर नहीं आ रही थी। जब कोई तारा टूटकर धरती की ओर आता था तो लगता था ग्रामवासियों की घोर पीड़ा से व्याकुल होकर वह उन्हे सांत्वना देने आ रहा था। लेकिन उसकी व्रीव चमक धरती तक पहुँचने से पहले ही अदृश्य हो जाता थी। अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता को देख जैसे हँस रहे थे।

विशेषः–(1) जाड़े की ठंडी रात का यथार्थ शब्द–चित्र अंकित हुआ है।

CBEO BHINDER
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

(2) प्रकृति को मानवीय संवदेनाओं से प्रभावित दिखाया गया है।
(3) भाषा साहित्यिक है।
(4) शैली शब्द चित्रात्मक है।

गद्यांश (2)

रात्रि की विभीषिका को सिर्फ पहलवान की ढ़ोलक ही ललकार कर चुनौती देती रहती थी। पहलवान संध्या से सुबह तक चाहे जिस ख्याल से ढ़ोलक बजाता हो, किन्तु गाँव के अर्द्धमृत, औषधि उपचार पथ्य विहिन प्राणियों में वह संजीवनी शक्ति ही भरती थी। बुढ़े, बच्चे, जवानों की शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का दृश्य नाचने लगता था। स्पंदन शक्ति शून्य स्नायुओं में भी बिजली दौड़ जाती थी।

प्रसंग :– इस अंश में लेखक रात्रि होने पर गाँव की डरावनी दशा का वर्णन कर रहा है। सुरज डूबते ही लोग अपनी झोपड़ियों में घुस जाते थे। सारे गाँव को चुप्पी घेर लेती थी। लोगों की बोली भी नहीं निकलती थी। उस सन्नाटे भरी रात में लोगों का एक ही सहारा था। पहलवान की ढ़ोलक से निकली ध्वनि ही उन्हे जिन्दा रखती थी। उस ढ़ोलक की ध्वनि में एक ललकार थी, मृत्यु को एक चुनौती थी।

व्याख्याः– लुट्टन शाम से सुबह तक ढ़ोलक बजाता रहता था। उसका ढ़ोलक बजाने के पीछे जो भी भाव रहा हो लेकिन ढ़ोलक की वह ध्वनि गाँव के बुढ़े, बच्चे और नौजवान, अधमरे, दवाई–इलाज और पथ्य से रहित प्राणियों में वह जीवन भर देती थी। उस ध्वनि को सुनकर गाँव के बुढ़े, बच्चे, नौजवान लोगों की शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का वही दृश्य नाचने लगता था। उनकी सुन्न पड़ गई नाड़ियों में बिजली सी दौड़ने लगती थी।

विशेषः– (1) हृदय को विचलित कर देने वाले दृश्यों का सजीव चित्रण हुआ है।
(2) भाषा साहित्यिक है और भाव संप्रेषण में पूर्ण समर्थ है।
(3) शैली शब्द चित्रात्मक है।

CREO BHINDER

गद्यांश (3)

मेरे पास वहाँ जाकर रहने के लिए रूपया नहीं है, यह मैने भक्तिन के प्रस्ताव को अवकाश न देने के लिए कहा था पर उसके परिणाम ने मुझे विस्मित कर दिया। भक्तिन के परम रहस्य का उद्‌घाटन करने की मुद्रिका बनाकर और पोपला मुँह मेरे कान के पास लाकर हौले–हौले बताया कि उसके पास रूपये थे जिन्हे उसने जमीन में गढा़ रखा है। उसी से वह एक प्रबन्ध कर लेगी। जब सब ठीक हो जाएगा तब यही लौट आयेगी। भक्तिन की कंजूसी के प्राण पूँजीभूत होते होते पर्वताकार बन चुके थे परन्तु इस उदारता के डाइनामाइट ने क्षणभर में उन्हें उड़ा दिया इतने थोडे रूपये का कोई महत्व नही परन्तु रूपये के प्रति भक्तिन का अनुराग इतना प्रख्यात हो चुका है कि मेरे लिए उसका परित्याग महत्व की सीमा तक पहुचाँ देता है।

उत्तर – सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यांश पाठयपुस्तक आरोह भाग –2 में संकलित पाठ भक्तिन से लिया गया है इसकी लेखिका महादेवी वर्मा है।

प्रसंग – लेखिका ने इस अंश में महा कंजूस भक्तिन के त्याग भाव का परिचय कराने वाली एक घटना का वर्णन किया है।

व्याख्या– जब युध्द के भय से लोग इधर उधर पलायन कर रहे थे तब एक दिन भक्तिन ने महादेवी के सामने उसके गाँव चलकर रहने का प्रस्ताव किया तब महादेवी ने उसके प्रस्ताव को टालने के लिए कहा कि उसके पास गाँव जाकर रहने के लिए रूपये नही थे यह सुनकर भक्तिन ने जो कहा उसे सुनकर वह चकित हो गई।घर के सभी लोग मानते थे कि भक्तिन रूपये–पैसे के मामले में बहुत ही कंजूस थी कोई सपने में भी सोच नही सकता था कि भक्तिन बडे परिश्रम से जोडे गए धन को अपने से अलग कर सकती थी। भक्तिन ने महादेवी के पास आकर इस प्रकार बात आंरम्भ की जैसे वह कोई बड़ी रहस्य की बात बताने जा रही थी

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

उसने अपने पोपले मुँह को महादेवी के कान के पास लाकर बडी धीमी आवाज में बताया था उसके पास रूपये थे जिन्हे उसने कहा कि लड़ाई कोई सदा तो चलती नही रहेगी लडाई समाप्त हो जाने पर वह महादेवी जी के साथ फिर उनके घर आ जाएगी भक्तिन की कंजूसी के किस्से पर्वत जैसे विशाल हो चुके थे परन्तु उसकी उस उदारता रूपी डाइनामाइट एक प्रबल विस्फोटक पदार्थ के विस्फोट से वे क्षणभर मे चूर–चूर हो गए एक महाकंजूस व्यक्ति का किसी की सहायता में अपनी सारी बचत लगा देने का संकल्प बहुत आश्चर्यजनक की बात थी भक्तिन की सारी पूँजी की मात्रा का उतना महत्व नही था वह बहुत कम थी लेकिन महादेवी जी के लिये उसका त्याग बता रहा था किउसके जीवन में अपनी मालकिन का कितना भारी महत्व था वह महादेवी जी के लिये अपना सर्वस्व न्यौछावर कर सकती थी।

विशेष – भक्तिन के स्वभाव में दुर्गुणों के होते हुए भी महादेवी ने उसके त्याग और स्वामीभक्ति की पूरी पूरी प्रशंसा की, भाषा व्यावहारिक है। पर्वत और डाइनामाइट जैसी उपमाओं के द्वारा शैली में आलंकारिता भी उपस्थित है।

गद्यांश (4)

भक्तिन और मेरे बीच में सेवक स्वामी का संबध है यह कहना कठिन है क्योंकि ऐसा कोई स्वामी नही हो सकता जो इच्छा होने पर भी सेवक को अपनी सेवा से हटा न सके और ऐसा कोई सेवक भी नही सुना गया जो स्वामी के चले जाने का आदेश पाकर अवज्ञा से हँस दे भक्तिन को नौकर कहना उतना ही असंगत है जितना अपने घर में बारी बारी से आने जाने वाले अँधेरे उजाले और आँगन में फूलने वाले गुलाब और आम को सेवक मानना वे जिस प्रकार एक अस्तित्व रखते है जिस सार्थकता से देने के लिए ही सुख–दुख है उसी प्रकार भक्तिन का स्वतंत्र व्यक्तित्व अपने विकास के परिचय के लिए ही मेरे जीवन को घेरे है।

उत्तर – सन्दर्भ –प्रस्तुत गद्यांश पाठयपुस्तक आरोह भाग –2 में संकलित पाठ भक्तिन से लिया गया है इस की लेखिका महादेवी वर्मा है।

प्रसंग– इस अंश में महादेवी बता रही है कि उनका और भक्तिन का संबध सेविका और स्वामिनी का संबध नही कहा जा सकता ।

व्याख्या –महादेवी कहती है कि भक्तिन केवल कहने भर के लिए उनकी सेविका थी उसने उनके घर में एक सहेली और अभिभाविका जैसा स्थान बना रखा था स्वामी तो वही होता है जिसक आज्ञा का पालन सेवक को करना ही होता है यदि वह सेवक को अपनी सेवा से चाह कर भी न हटा सके तो वह स्वामी कैसे कहा जाएगा ? इसी प्रकार जो सेवक स्वामी द्वारा नौकरी छोड़कर चले जाने का आदेश पाकर भी उस पर ध्यान न दे और हँसता रहे उसे सेवक कैसे कहा जा सकता है ? महादेवी कहती है कि घर के आँगन में बारी बारी से रात का अंधेरा और दिन का उजाला आता रहता है, क्या इनको हम अपना सेवक कह सकते है यद्यपि ये निरन्तर हमें अपनी सेवाएँ दिया करते है इसी प्रकार आँगन में लगे हुए गुलाब और आम भी अपनी सुगंध और स्वाद से हमारे मन को प्रसन्न किया करते है वे भी हमारे सेवक नही होते। भक्तिन भी इसी प्रकार उनकी सेविका नही कही जा सकती। अंधेरे उजाले का और गुलाब तथा आम का अपना एक विशेष अस्तित्व होता है। एक विशेष संबंध होता है। इसी संबंध को प्रमाणित करने के लिये वे हमें समय समय पर सुख–दुख का अनुभव कराते रहते है महादेवी कहती है कि इसी प्रकार भक्तिन का भी उनके जीवन में एक विशेष स्थान था एक स्वतंत्र व्यक्ति के प्रमाण के रूप में वह उनके पूरे जीवन में व्याप्त थी।

विशेष– महादेवी जी ने माना है कि उनका भक्तिन से जो संबध था उसे कोई निश्चित नाम दे पाना कठिन था भाषा सरल है। शैली में लक्षण और व्यजंना शक्ति की प्रधानता काव्य को रोचक बना रही है।

CBEO BHINDER

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

गद्यांश(5)

. बाजार आमन्त्रित करता है कि आओं मुझे लूटो और लूटो । सब भूल जाओ, मुझे देखो। मेरा रूप और किसक लिए हैं? मैं तुम्हारे लिए हूँ । नहीं कुछ चाहते हो, तो भरी देखने में क्या हरज है। अजी आओ भी। इस आमान्त्रण में यह खूबी है कि आग्रह नहीं है आग्रह तिरस्कार जगाता हैं। लेकिन उँचे बाजार का आमन्त्रण मूक होता है और उससे चाह जगती है। चाह मतलब अभाव। चौक बाजार में खड़े होकर आदमी को लगने लगता है कि उसके अपने पास काफी नहीं है और चाहिए, और चाहिए। मेर यहाँ कितना परिमित है और यहाँ किता अतुलित है ओह !

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश जैनेन्द्र कुमार द्वारा लिखित निबन्ध 'बाजार दर्शन' से लिया गया है। इसमें लेखक ने बाजार की आकर्षित करने वाली प्रवृति को बताया है।

व्याख्या– लेखक बताते हैं कि बाजार तो आमन्त्रित ही करता है अर्थात अपने लुभावने अंदाज से बुलाता ही है। कहता है कि लूटो, मुझे और लूटा। सब कुछ भूल कर मुझे देखो मेरा रूप, मेरा आकर्षणबस तुम्हारे लिए है। कुछ नहीं खरीदना है तो भी देखने में क्या नुकसान है, आओ और देखो। बाजार के इस तरह के आमंत्रण में आग्रह नहीं, आकर्षण है। आग्रह कर–करके बुलाने में हम स्वयं नही जाते हैं कि लेकिन जो मूक रह कर, शब्उविहीन इशारों से बुलाता है वह होता हैं रंगीन बाजार, उसे देखने की लालसा जागती है। लालसा का अर्थ अभाव का होना है। और यही अभाव व्यक्ति को बाजार के आकर्षण में बाँध देता हैं। इन्ही आकर्षण के बीच खड़े होकर, विभिन्न प्रकार की वस्तुओं को देख कर आदमी को हीनता घेर लेती है। उसे लगने लगता है कि उसके पास कुछ नहींहै, और चाहिए, और चाहिए। मेरे पास कितना कम है और इस बाजार में कितना कुछ अधिक है, अथाह है। ओह! और यही ओह! इसे अधिक खरीदने को विवश करती है, ललचाती है, निरर्थकता को बढ़ावा देती है।

विशेष– (1) लेखक ने बाजार की लुभावनी, आकर्षित करने वाली प्रवृति पर प्रकाश डाला है।

(2) भाषा खड़ी बोली हिन्दी तथा उर्दू मिश्रित है।

गद्यांश(6)

. बाजार को सार्थकता भी वही मनुष्य देता है जा जानता है कि व क्या चाहता है। जो नहीं जानते कि वे क्या चाहते हैं, अपनी 'पर्चेजिंग पावर' के गर्व में अपने पैसे से केवल एक विनाशक शक्ति–श्शैतानी शक्ति, व्यंग्य की शक्ति ही बाजार को देते हैं। न तो वे बाजार से लाभ उठा सकत हैं, न उस बाजार को सच्चा लाभ दे सकते हैं। वे लोग बाजार का बाजारूपन बढ़ाते हैं। जिसका मतलब है कि कपट बढ़ाते हैं। कपट की बढ़ती का अर्थ परस्पर मे सद्भाव की घटी।

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश जैनेन्द्र कुमार द्वारा लिखित निबन्ध 'बाजार दर्शन से लिया गया है। लेखक ने उन लोगों पर व्यंग्य किया है जो अर्थ का गलत उपयोग करके बाजार में कपटीपन को बढ़ावा देते हैं। और सद्भाव को घटाते हैं।

CBEO BHINDER

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

व्याख्या– लेखक कहते हैं कि बाजार को सार्थकता अर्थात सही मायनें में सही अर्थ वही व्यक्ति देता है जो यह जानता है कि वह क्या चाहता है? उसे क्या खरीदना है? किस प्रकार उसके पैसे का सही उपयोग हो? जो व्यक्ति यह बात नहीं जानते हैं कि वे क्या–क्या चाहते? वे केवल अपनी क्रय शक्ति के अभिमान में अपने पैसे से केवल बाजार को एक विनाशकारी शक्ति एवं शैतानी शक्ति तथा व्यंग्य शक्ति ही बाजार को देते है। कहने के आशय है कि अपने पैसे द्वारा बाजार में होड़ की प्रवृति, पैसे का नाश की प्रवृति, दूसरों द्वारा व्यंग्य करने की शक्ति ही वह बाजार को उे जाते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि वे लोग बाजार में बाजारूपन अर्थात व्यवहार का हल्कापन बढ़ाते है। यह हल्कापन व्यवहार में कपट का बढ़ना, धोखा देना,कीमत से ज्यादा मूल्य, घटिया सामान देना इस तरह की प्रवृति अतिरिक्त पैसा ही बाजार को सिखाता है। इस प्रकार कपट का बढ़ता प्रसार का अर्थ होता है सद्भावों में कमी आना । सद्भाव अर्थात अच्छे गुणों की कमी। इसकी कमी से समाज की संस्कृति का हास होता है और इसका प्रत्यक्ष कारण बाजार में बिना उद्देश्य पैसे की अनुचित क्रय शक्ति का दिखावा ही है।

विशेष– (1) लेखक ने क्रय शक्ति के अनुचित प्रयोग के परिणामों पर प्रकाश डाला है।

(2) हिन्दी खड़ी बोली का प्रयोग एवं व्याख्यात्मक शैली का प्रयोग हुआ है।

प्रश्न 50 . निम्नलिखित पद्यांशों की संप्रसंग व्याख्या कीजिए–

पद्यांश (1)

(कैमरा
बस करो
नहीं हुआ
रहने दो
परदे पर वक्त की कीमत है।)
अब मुस्कराएँगे हम
आप देख रहे थे सामाजिक उद्देश्य से युक्त कार्यक्रम
(बस थोडी ही कसर रह गई)
धन्यवाद।

प्रसंगः– प्रस्तुत काव्यांश कवि रघुवीर सहाय द्वारा लिखित काव्य संग्रह 'लोग भूल गए है' की कविता 'कैमरे में बंद अपाहिज' से लिया गया है जिसमें कवि ने मीडिया की दोहरी काव्य–नीति पर व्यंग्य किया है।

व्याख्या :– कवि बताते है कि जब कार्यक्रम संचालक दर्शकों को रूलाने की चेष्टा में सफल नहीं होता है तो तब वह कैमरामेन को कैमरा बन्द करने का आदेश देते हुए कहता है कि अब बस करो यदि अपाहिज का दर्द पूरी तरह प्रकट न हो सका तो न सही। परदे का एक–एक क्षण कीमती होता है। समय और धन व्यय का ध्यान रखना पडता है। आशय है कि कार्यक्रम को दूरदर्शन पर प्रसारित में काफी समय एवं धन का व्यय होता है इसीलिए अपाहिज के चेहरे से कैमरा हटवाकर संचालक दर्शकों को संबोधित कर कहता है कि अभी आपने सामाजिक उद्देश्य की पूर्ति हेतु दिखाया गया कार्यक्रम प्रत्यक्ष देखा। इसका उद्देश्य अपाहिजों के दुःख–दर्द को पुरी तरह सम्प्रेषित करना था (परन्तु इसमें थोडी से कमी रह गई अर्थात् अपाहिज के रोने का

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

दृश्य नहीं आ सका तथा दर्शक भी नहीं रो पाये। अगर दोनो एक साथ रो देते तो कार्यक्रम सफल हो जाता, ऐसे वह नहीं बोलता है अन्त में कार्यक्रम संचालक दर्शकों को धन्यवाद देता है यह धन्यवाद मानो उसके संवेदनाहीन व्यवहार पर व्यंग्य है।

विशेषः— (1) कवि कार्यक्रम संचालन के कार्य एवं उद्देश्य पर सीधे व्यंग्य करते है कि कार्य अपाहिज की सहायता या संवेदना व्यक्त करना नहीं था वरन् अपना कार्यक्रम सफल बनाना था।
(2) भाषा सरल—सहज व सम्प्रेषणीय है।

पद्यांश (2)

फिर हम परदे पर दिखलाएँगे
फूली हुई आँख की एक बड़ी तस्वीर
बहुत बड़ी तस्वीर
और उसके होंठो पर एक कसमसाहट भी
(आशा है आप उसे उसकी अंपगता की पीड़ा मानेंगे)
एक और कोशिश
दर्शक
धीरज रखिए
देखिए
हमे दोनो एक संग रूलाने है
आप और वह दोनो

प्रसंगः— प्रस्तुत काव्यांश कवि रघुवीर सहाय द्वारा लिखित काव्य संग्रह 'लोग भूल गए है' की कविता 'कैमरे में बंद अपाहिज' से लिया गया है जिसमें कवि ने मीडिया पर व्यंग्य किया है कि अपने कार्यक्रम को सफल एवं लाकेप्रिय बनाने हेतु वे किस प्रकार अपाहिज व दर्शक दोनों को रूलाना चाहते है।

व्याख्याः— दूरदर्शन कार्यक्रम संचालक का यह प्रयास रहता है कि उसके बेहूदे प्रश्नों से अपाहिज रोवे और वह उससे संबधित दृश्य का प्रसारण करे। इसलिए वह अपाहिज की सूजी हुई आँखे बहुत बड़ी करके दिखाता है। इस प्रकार वह उसके दुःख—दर्द को बहुत बड़ा करके दिखाना चाहता है। वह अपाहिज के होठों की बेचैनी एवं लाचारी भी दिखाता है। संचालक कार्यक्रम को रोचक बनाने के प्रयास में सोचता है कि अपाहिज की बेचैनी को देखकर दर्शकों को उसकी अनुभूति हो जायेगी। इसलिए वह कोशिश करता है कि अपाहिज के दुःख—दर्द को इस तरह दिखावे कि उससे अपाहिज के साथ दर्शक भी रोने लगे। उस समय दर्शक केवल अपाहिज को देखे और धैर्यपूर्वक उसके दर्द को आत्मसात् कर सके।

विशेषः— (1) कवि ने मीडिया की व्यापार वृत्ति पर व्यंग्य किया है कि किस प्रकार वे उसकी विकलांगता एवं दर्शकों की सहानुभूति को भुनाते है।

(2) भाषा सरल—सहज है, व्यंग्यात्मक पूर्ण भाषा एवं प्रवाहमयता है।

पद्यांश (3)

जाने क्या रिश्ता है, जाने क्या नाता है
जितना भी उँडेलता हूँ, भर—भर फिर आता है
दिल में क्या झरना है?
मीठे पानी का सोता है
भीतर वह, ऊपर तुम
मुसकाता चाँद ज्यों धरती पर रात—भर
मुझ पर त्यों तुम्हारा ही खिलता वह चेहरा है!

CBEO BHINDER

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

सन्दर्भ व सप्रसंगः–प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह' में संकलित कवि गजानन माधव मुक्तिबोध की कविता 'सहर्ष स्वीकारा है' से लिया गया है। इस अंश में कवि अपनी प्रिया के प्रति प्रेम को व्यक्त कर रहा है।
व्याख्याः–कवि अपनी प्रियतम को अत्यन्त चाहता है वह यह समझने में असमर्थ है कि उन दोनो के बीच यह कैसा संबंध है। वह कौनसा रिश्ता है जिसने उसको प्रियतम से एकता की डोर से बांध दिया है? कवि के मन में अपने प्रियतम के प्रति जो अपार स्नेह भरा है ,उसे वह बार–बार प्रकट करता है। वह जितनी बार स्नेह उडेलता है, उतनी ही बार वह पुनः भर जाता है। कवि को ऐसा लग रहा है कि जैसे उसके हृदय में प्रेम को कोई झरना झर रहा है या स्नेह के मीठे जल का कोई स्त्रोत बह रहा है। प्रिय का खिला हुआ मुख कवि के ऊपर सदा इस तरह छाया रहता है जिस प्रकार पुर्णिमा का चन्द्रमा रातभर पृथ्वी के ऊपर अपनी चाँदनी की छटा बिखेरता रहता है।
विशेष :–(1) भाषा सरल, सहज प्रवाहपूर्ण खड़ी बोली युक्त है।
(2) तत्सम तद्भव तथा देशज शब्दों का प्रयोग।
(3) अनुप्रास,रूपक तथा पुनरूक्ति प्रकाश अंलकारों का प्रयोग।
(4) मुक्त छंद का प्रयोग।

पद्यांश (4)

मैं यौवन का उन्माद लिए फिरता हूँ,
उन्मादों में अवसाद लिए फिरता हूँ,
जो मुझकों बाहर हंसा, रूलाती भीतर,
मैं हाय, किसी की याद लिए फिरता हूँ।

उत्तर– सन्दर्भ तथा प्रसंग प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित कवि हरिवंशराय 'बच्चन' की कविता 'आत्म'– परिचय से लिया गया है। कवि इस अंश में अपनी परस्पर विरोधी मनोभावनाओं को व्यक्त कर रहा है।

व्याख्या- कवि कहता है कि वह युवावस्था के उत्साह से भरा हुआ है। उत्साह की अधिकता ने उसको पागल सा बना दिया है। वह समस्त विश्व को प्रेम की शिक्षा देना चाहता है परन्तु अपने प्रयत्न से सफलता मिलती न देखकर उसका मन निराशा और कष्ट से भर उठता है। उसके मन में किसी अज्ञात प्रेमी (ईश्वर) की याद छिपी हुई है। इस याद के सहारे उसका जीवन बीत रहा है। इस प्रेम को सहेजकर वह ऊपर से हँसता है परन्तु अन्दर ही अन्दर मन रोता रहता है।

विशेष–कवि ने इस अंश में अपने मन के विचित्र अन्तर्द्वन्द्व को व्यक्त किया है। बाहर से हँसना और भीतर से रोना तथा किसी अज्ञात की यादों में खोना, इस अंश में छायावाद और रहस्यवाद की झलक दिख रही है।

पद्यांश (5)

हो जाए न पथ में रात कहीं,
मजिंल भी तो है दूर नहीं–
यह सोच थका दिन का पंथी भी जल्दी–जल्दी चलता है।
दिन जल्दी–जल्दी ढलता है।

उत्तर– संदर्भ तथा प्रसंग– प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक मे संकलित कवि हरिवंशराय 'बच्चन' की कविता दिन जल्दी–जल्दी ढलता है' से अवतरित है। इस अंश में कवि ने संकेत किया है कि उसकी जीवन यात्रा रूपी दिन ढलने वाला है।

CBEO BHINDER

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

व्याख्या–कवि कहता है कि वह दिनरूपी यात्रा में यद्यपि चलते– चलते थक गया है किन्तु वह यह सोचकर जल्दी –जल्दी कदम उठा रहा है कि कहीं रास्ते में ही रात नहीं हो जाए। उसका गन्तव्य अब तक अधिक दूर नहीं हैं परन्तु उसे ऐसा लग रहा है कि दिन जल्दी ही ढलने वाला है।द्ध

विशेष – कवि को भय सता रहा है कि रास्ते में ही रात हो जाए और वह मंजिल तक न पहुँच पाए। मानवीकरण, रूपकातिशयोक्ति तथा पुनरूक्ति प्रकाश अंलकार प्रयुक्त हुए हैं।

पद्यांश (6)

आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी
हाथों पे झुलाती है उसे गोद-भरी
रह-रह के हवा में जो लोका देती है
गूंज उठती है खिलखिलाते बच्चे की हँसी

कठिन शब्दार्थ- चाँद का टुकड़ा = बहुत प्यारा बेटा | लोका देना = उछाल-उछाल कर प्यार करना |

प्रसंग - प्रस्तुत काव्यांश कवि शायर 'फिराक गोरखपुरी' की रचना 'गुले-नग्मा से उद्धत 'रुबाइयाँ' से लिया गया है। 'रुबाई उर्दू और फारसी का एक छंद या लेखन शैली है। इसमें शायर ने वात्सल्य रस का चित्रण किया है, जिसमें माँ अपने नन्हें शिशु को प्यार से अपनी बाँहों में सुला रही है।

व्याख्या - फिराक गोरखपुरी कहते हैं कि एक माँ अपने प्यारे शिशु को गोद में लिए आँगन में खड़ी है। कभी वह उसे हाथों से झुलाने लगती है और कभी उसे हवा में उछाल-उछालकर गोद में भर लेती है। प्यार करने की इस क्रिया से बच्चा खुश होकर खिलखिलाकर हँस उठता है और आँगन में उसकी हँसी को किलकारी गूंज उठती है तथा माँ बेटा दोनों ही अतिप्रसन्न होते हैं।

विशेष- (1) कवि ने वात्सल्य प्रेम के द्वारा माँ बेटे की प्रसन्नता का वर्णन किया है।
(2) वात्सल्य रस है, दृश्य बिम्ब है, रुबाई छंद है।
(3) उर्दू-हिन्दी मिश्रित शब्दावली तथा 'लोका देना' देशज भाषा का प्रयोग है।

पद्यांश (7)

फ़ितरत का कायम है तवाजुन आलमे-हुस्नो-इश्क में भी
उसको उतना ही पाते हैं खुद को जितना खो ले हैं
आबो-ताब अश्आर न पूछो तुम भी आँखें रक्खो हो
ये जगमग बैतों की दमक है या हम मोती रोले हैं

कठिन शब्दार्थ-फितरत = आदत , कायम = स्थापित , तवाजुन = सन्तुलन , आलमे-हुस्न-इश्क = प्रेम और सौन्दर्य का संसार, आबो-ताब अशआर = चमक-दमक के साथ, आँखें रक्खो = देखने में समर्थ ,बैत =शेर, मोती रोले = आँसू बहा लें।

प्रसंग - प्रस्तुत काव्यांश कवि, शायर 'फिराक गोरखपुरी' द्वारा रचित 'गजल' से लिया गया है। इसमें कवि ने विरही मन की दशा एवं प्रेम के स्वरूप पर प्रकाश डाला है।

व्याख्या - कवि कहता है कि प्रेम और सौन्दर्य के संसार में भी मनुष्य की आदत-स्वभाव का विशेष महत्त्व है। प्रेम-व्यवहार में भी लेन-देन का सन्तुलन बराबर बना रहता है। जो मनुष्य प्रेम में स्वयं को जितना अधिक खोता है।

CBEO BHINDER
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

अर्थात् समर्पित कर देता है, वह उतना ही अधिक प्रेम प्राप्त करता है। आशय यह है कि प्रेम पाने के लिए स्वयं को खोना भी पड़ता है।

कवि कहता है कि तुम्हें मेरी शायरी की चमक-दमक पर जाने की जरूरत नहीं है। तुम्हें अपनी आँखें खोलनी चाहिए अर्थात् ध्यान से मेरी शायरी को देखो, इनकी चमक में मेरे आँसुओं की छाया है अर्थात मेरे दुःख-दर्द व पीड़ा आँसुओं के रूप में इन शायरी में अपनी चमक सौन्दर्य बिखेर रहे हैं।

विशेष-(1) कवि ने प्रेम के स्वभाव एवं विरह की दशा का वर्णन किया है।

(2) उर्दू की कठिन शब्दावली का प्रयोग,आँखें रखना मुहावरे का प्रयोग तथा वियोग श्रृंगार रस है।

पद्यांश (8)

प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे
भोर का नभ
राख से लीपा हुआ चौका
(अभी गीला पड़ा है)
बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से
कि जैसे धूल गई हो
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक
मल दी हो किसी ने

कठिन शब्दार्थ-नभ = आकाश, चौका = रसोई बनाने का लिपा पुता स्थान, सिल = मसाला पीसने का पत्थर

प्रसंग - प्रस्तुत काव्यांश कवि शमशेर बहादुर सिंह की कविता उषा से लिया गया है। इसमें कवि ने प्रातःकालीन प्रकृति का वर्णन किया है। जब उषा (सुबह) का आगमन होता है, तब आकाश की विभिन्न छटाएँ अत्यन्त मनोहर प्रतीत होती हैं।

व्याख्या- प्रातः कालीन वातावरण का चित्रण करते हुए कवि कहता है कि प्रातःकाल होते ही आकाश का रंग नीले शंख के समान गहरा नीला हो गया, अर्थात् शंख की तरह नीला, निर्मल एवं मनोरम बन गया। फिर भोर हुई तो आकाश में हल्की सी लाली बिखर गई तथा आसमान के वातावरण में कुछ नमी भी दिखाई देने लगी। कवि कहता है कि उस समय आकाश ऐसा लग रहा था कि मानो राख से लीपा हुआ चौका हो जो अभी-अभी लीपने से कुछ गीला हो। आशय यह है कि भोर का दृश्य कुछ काले और लाल रंग के मिश्रण से अतीव मनोरम लगने लगा। तब कुछ क्षणों के बाद ऐसा लगने लगा कि आकाश काली सिल हो और उसे अभी-अभी केसर से धो दिया हो अथवा किसी ने काली नीली स्लेट पर लाल रंग की। खड़िया चाक मल दी हो।

CBEO BHINDER

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

अर्थात् भोर होने पर अंधेरे से ढकी आकाश काली सिल तथा स्लेट के समान लगने लगा और उस पर सूर्य की लालिमा लाल केसर एवं लाल खड़िया चाक के समान प्रतीत होने लगी। इससे प्रातःकाल का आकाशीय परिवेश अतीव सुरम्य आकर्षक बन गया।

विशेष-(1) कवि ने 'भोर' का चित्रण सरल, सुबोध एवं लघु आकार में किया है।

(2) भाषा तत्सम तद्भव एवं अंग्रेजी-हिन्दी मिश्रित है।

(3) उपमा, उत्प्रेक्षा अलंकारों का प्रयोग प्रस्तुत हुआ है।

पद्यांश (9)

नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो।
और
जादू टूटता है इस उषा का अब
सूर्योदय हो रहा है।

कठिन शब्दार्थ-गौर = गोरा , देह = शरीर ,झिलमिल = चमकता हुआ।

प्रसंग - प्रस्तुत काव्यांश कवि शमशेर बहादुर सिंह की कविता ' उषा ' से लिया गया है। सूर्योदय से पहले पल-पल बदलता प्रकृति का सुन्दर रूप वर्णन किया गया है।

व्याख्या - कवि सूर्योदय से पहले आकाश में पल पल परिवर्तित होते हुए सुरम्य वातावरण का चित्रण करते हुए बताता है कि प्रातः जब नीले वर्ण के आकाश में सूर्य की चमकती हुई श्वेत आभा दिखाई देने लगती है, तो ऐसा लगता है जैसे नीले जल में किसी सुन्दरी की गोरी देह झिलमिल कर रही हो, अर्थात् प्रातःकालीन नमी एवं मन्द हवा के कारण सूर्य की किरणें हिलती हुई नायिका के समान लगती है सूर्य का श्वेत बिम्ब भी हिलता-सा प्रतीत होता है। कुछ क्षण बाद जब सूर्य उदित होता है, तब उषा काल के पल-पल बदलते रंगों का अथवा प्राकृतिक परिवेश का चमत्कारी सौन्दर्य समाप्त हो जाता है, अर्थात् सूर्योदय होते ही उषा काल का रंगीन सुरम्य वातावरण चमत्कारी जादू की तरह समाप्त हो जाता है और चारों तरफ सूर्य का तेज प्रकाश फैल जाता है।

विशेष-(1) कवि ने उषाकाल के दौरान सूर्य की लाल, पीली व श्वेत आभा का सुन्दर वर्णन किया है।

(2) भाषा भावानुरूप सरल व सुबोध है। उत्प्रेक्षा अलंकार का प्रयोग हुआ है।

पद्यांश(10)

जन्म से ही अपने साथ लाते हैं कपास
पृथ्वी घूमती हुई आती है उनके बेचैन पैरों के पास

CBEO BHINDER

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

जब वे दौडते हैं बेसुध
छतों को भी नरम बनाते हुए
दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए
जब वे पेंग भरते हुए चले आते हैं
डाल की तरह लचीले वेग से अक्सर

प्रसंग – प्रस्तुत काव्यांश कवि आलोक धन्वा द्वारा लिखित काव्य–संग्रह 'दुनिया रोज बनती है' की कविता 'पतंग'से लिया गया है । बच्चों का कोमल व लचीला होना तथा पतंग उडाते समय किसी बात का होश न रखना का कवि ने वर्णन किया है ।

व्याख्या– कवि कहते हैं कि बच्चे जन्म के साथी ही अर्थात जब वे जन्म लेते हैं तभी से उनका शरीर कोमल रूई के समान हल्का होता है । उनकी कोमलता का स्पर्श करने के लिए स्वयं पृथ्वी भी उनके व्याकुल पैरों के पास आती है । जब वे बेसुध होकर आस–पास की स्थिति को जाने–बिना दौडते हैं, तब उनके पैरों के स्पर्श से कठोर छतें भी कोमल बन जाती है। उनके भागते पैरों की आवाज से प्रतीत होता हे कि चारों दिशाएँ मृदंग की भॉति मधुर संगीत निकाल रही हों । वे पतंग उडाते हुए झूले की भॉति पेंग भरते हुए, आगे–पीछे होते हुए दौडते हैं । उस समय बच्चो का शरीर पेड की डालियों की तरह लचीलापन लिये हुए रहता है । झुकना, मुडना दौडना, कूदना सारी क्रियाएँ शरीर के लचीलेपन के कारण ही कर पाते हैं।

विशेष– 1. कवि ने बच्चों की चेष्टाओं का सुन्दर वर्णन प्रस्तुत किया है।
2. मानवीकरण, अनुप्रास, उपमा अलंकारों का प्रयोग तथा खड़ी बोली युक्त मिश्रित शब्दावली है।

CBEO BHINDER

पद्यांश(11)

अगर वे कभी गिरते हैं। छतों के खतरनाक किनारों से
और बच जाते हैं तब तो
और भी निडर होकर सुनहले सूरज के सामने आते हैं
पृथ्वी और भी तेज घुमती हुई आती है
उनके बेचैन पैरों के पास ।

प्रसंग– प्रस्तुत काव्यांश कवि आलोक धन्वा द्वारा लिखित काव्य–संग्रह 'दुनिया रोज बनती है' की कविता 'पतंग' से लिया गया है । पतंग उडाते समय बच्चों का उत्साह व खतरों से बचने की निडरता को प्रस्तुत किया गया है।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

व्याख्या– कवि कहते हैं कि आकाश में अपनी उडती पतंगों को देखकर बच्चे अत्यधिक उत्साही हैं मानो अपने रंधों के सहारे वे भी उड रहे हों । कभी–कभार छतों के खतरनाग किनारों से गिर भी जाते है। परंतु अपने लचीले शरीर के कारण बच भी जाते है। बचने के कारण उनके मन का बचा–खुचा भय भी समाप्त हो जाता है। फिर वे भयरहित होकर निडरता के साथ चमकते सूर्य के सामने फिर से आते हैं। उनकी गति और उत्साह और भी तेज हो जाता हैं। ऐसा लगता है मानों पृथ्वी और भी तेज धूमती हुई बच्चों के भागते तेज कदमों के समीप स्वयं ही आ रही हो।

विशेष– 1. बच्चे खतरों को झेल कर साहसी बनते हैं तथा दुगुने मनोवेग से पुनः अपना कार्य शुरू कर देते हैं, इस भाव को प्रस्तुत किया गया है।

2. मानवीकरण, अनुप्रास, उत्प्रेरक्षा अलंकारों का प्रयोग तथ मुक्त छनद की प्रस्तुति है । भाषा में लाक्षणिकता व बिम्ब प्रयोग है।

प्रश्न 51 कुँवर नारायण का जन्म कब हुआ–

(अ) 1927 (ब) 1909 (स) 1807 (द) 1985 **(अ)**

प्रश्न 52 कविता के बिना मुरझाए महकने का अर्थ है–

(अ) कभी पुराना न होना
(ब) फुल की तरह सुगंध देना
(स) देशकाल से परे रहकर रसात्मक बने रहना
(द) कभी न मुरझाना **(स)**

प्रश्न 53 बच्चों के खेल की मानवता को क्या देन है?

उत्तर– बच्चों के खेल की मानवता को भेदभाव भुलाने सच्ची एकता अपनाने की शिक्षा देते है।

प्रश्न 54 बिना मुरझाए कौन महकता है और क्यों ?

उत्तर– फुल मुरझाने पर सुगंध नहीं देता है। कविता कभी मुरझाती नहीं। वह सदा महकती है अर्थात् उसका आनन्द देशकाल की सीमा के पार सभी को प्राप्त होता है।

प्रश्न 55 "बात और भी पेचीदा होती चली गई" से कविता का तात्पर्य क्या है ?

उत्तर– कवि कविता में सरल मनोभावों को व्यक्त करना चाहता था किन्तु अस्वाभाविक क्लिष्ट भाषा के कारण उसे सफलता नहीं मिली। वह भाषा को संशोधित करता तो वह और अधिक दुरूह हो जाती है। इसके साथ ही उसका कथ्य भी अस्पष्ट हो जाता था।

प्रश्न 56 बात की चुड़ी कब मर जाती है? उसका क्या परिणाम होता है?

उत्तर– 'बात की चुड़ी मर गई' में कवि–कथन के प्रभावहीन होने की व्यंजना है। बात को अस्वाभविक भाषा में व्यक्त करने के प्रयास में वह प्रभाव शून्य हो गई।

CBEO BHINDER

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

प्रश्न 57 "कविता एक खेल है बच्चों के बहाने" 'कविता के बहाने ' पाठ में कविता और बच्चे मानव समाज को क्या संदेश देते है?

उत्तर– कविता हमें यान्त्रिकता के दबाव से निकलने तथा उल्लास के साथ आगे बढ़ने का संदेश देते है।

प्रश्न 58 रिक्त स्थानों की पूर्ति कोष्ठक में से उचित शब्द चुनकर कीजिए–

(i) कविता की **उड़ान** भला चिड़िया क्या जाने (तान / उड़ान)

(ii) बात और भी **पेचीदा** होती चली गई (सरल / पेचीदा)

प्रश्न 59 "कैमरे में बन्द अपाहिज" करूणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है। विचार कीजिए।
उत्तर–"कैमरे में बन्द अपाहिज" शीर्षक कविता में संचालक अपंग व्यक्ति के प्रति करूणा एवं संवेदना दिखाता है, परन्तु उसका उद्देश्य अपने कार्यक्रम से लोकप्रिय एव बिकाऊ बनाना है वह उसकी अपंगता बेचना चाहता है। उसकी करूणा एकदम बनावटी है उसमें क्रूरता छिपी हुई है। संचालक द्वारा अपाहिज से बार–बार पुछा जाता है कि क्या आप अपाहिज है? अपाहिजपन से कितना दु:ख होता है? अपाहिज होना कैसा लगता है? इस तरह के प्रश्न पूछना उनकी संवेदनहीनता को प्रकट करता है तथा दूरदर्शन पर दिखाये जाने वाले ऐसे कार्यक्रम करोबारी दबाव के कारण संवेदनारहित एव क्रूरता वाले होते है।

प्रश्न 60 "कैमरे में बन्द अपाहिज" कविता में किन पर व्यंग्य किया गया है?
उत्तर– प्रस्तुत कविता में दूरदर्शन के कार्यक्रम संचालको एवं मीडिया व्यवसाय पर व्यंग्य किया गया है क्योकि ये लोग अपाहिजों के दु:ख दर्द को अपने कार्यक्रमों की लोकप्रियता बढाने के उद्देश्य से दिखाते है और अपना व्यवसाय चमकाने के लिए संवेदनाहीन आचरण करते है।

प्रश्न 61 "कैमरे में बन्द अपाहिज" कविता का प्रतिपाद्य या उद्देश्य क्या है?
उत्तर–प्रस्तुत कविता का उद्देश्य यह बताना है के किसी के दु:ख–दर्द का बाजारीकरण कदापि उचित नहीं है। अपाहिजों के प्रति सहानुभूति एवं करूणा रखनी चाहिए। कविता का प्रतिपाद्य दूरदर्शन की छद्म क्रूरता पर आक्षेप करना है एवं उसकी दोहरी चाल को प्रकट करना है।

प्रश्न 62 दूरदर्शन वाले अपाहिज से प्रायः कैसे प्रश्न पुछते है और क्यों?
उत्तर–दूरदर्शन वाले प्रायः पूछते है कि क्या आप अपाहिज है? आप अपाहिज क्यो है? क्या अपाहिज होना दु:ख देता है? इस तरह के बेहूदे प्रश्न पूछकर वे कार्यक्रम को रोचक बनाना चाहते है ताकि दर्शको की सहानुभूति अपाहिज के साथ–साथ उनके कार्यक्रम से जुडी रहे।

प्रश्न 63 "कैमरे में बन्द अपाहिज" कविता क्या प्रेरणा दी गई है?
उत्तर–प्रस्तुत कविता से यह प्रेरणा दी गई है कि हमें शारीरिक चुनौती झेलने वाले लोगों के प्रति संवेदनाशील नजरिया रखना चाहिए। उसकी अपंगता का किसी भी प्रकार का मजाक नहीं बनाना चाहिए। दूरदर्शन वालों को संवेदना और करूणा रखकर उद्देश्य की पूर्ति करनी चाहिए।

प्रश्न 64 "कैमरे में बन्द अपाहिज" कविता की भाषा–शैली पर प्रकाश डालिए।

CBEO BHINDER
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

उत्तर—रघुवीर सहाय ने अपनी इस काव्य–रचना में पत्रकारिता दृष्टि का सृजनात्मक प्रयोग किया है। मानवीय पीडा की अभिव्यक्ति करना ही इनकी कविता का उद्देश्य रहा है। इसके लिए उन्होने नयी काव्य–भाषा का विकास किया। उनकी भाषा सटीक, दो–टूक और विवरण प्रधान है। अनावश्यक शब्दों का प्रयोग नहीं है। भय से उत्पन्न आवेग रहित अभिव्यक्ति उनकी कविता की प्रमुख विशेषता है। भाषा का पारम्परिक मोह त्यागकर सरल और बोलचाल की भाषा जो आम आदमी के समीप होती है का उपयोग इन्होने अपनी इस कविता में किया है। भाषा को अपने तरीके से तोड़ना, शब्दों को नए अर्थो से जोडना, वाक्य रचना में व्याकरण के मानकों की अवहेलना करना इनकी विद्या में है। शैली अभ्यास खोजती है और व्यक्तित्व के निर्माण की तरह शैली का निर्माण भी पथ–प्रदर्शन चाहता है। इनकी कविताओं में इनके व्यक्तित्व की स्पष्ट छाप है।

प्रश्न 65 "कैमरे में बन्द अपाहिज" कविता के द्वारा पत्रकारिता के अमानवीय पहलू पर चोट की गई है। तर्क सहित टिप्पणी कीजिए।

उत्तर—"कैमरे में बन्द अपाहिज" कविता में एक अपाहिज मनुष्य का कैमरे के सामने साक्षात्कार दिखाया गया है। ऊपर से देखने पर तो यह कार्यक्रम उस अपाहिज की पीड़ा को दिखाकर उसके प्रति दर्शकों के मन में सहानुभूति जगाने के लिए प्रस्तुत किया जा रहा है। वास्तव में तो इसका उद्देश्य दूरदर्शन के अपने चैनल को लोकप्रिय बनाना तथा विज्ञापनों द्वारा अधिकाधिक लाभ कमाना है। अपाहिज व्यक्ति से पूछे गए कुछ प्रश्न पीड़ा को कुरदने वाले, स्वाभिमान पर चोट करने वाले और मूर्खतापूर्ण है। यह भावनात्मक अत्याचार है। करूणा नहीं करूणा का पाखण्ड है।

प्रश्न 66 "हम समर्थ शक्तिवान और हम एक दुर्बल को लाएँगे" पंक्ति के माध्यम से कवि ने क्या व्यंग्य किया है?

उत्तर—"कैमरे में बन्द अपाहिज" कविता में कवि रघुवीर सहाय ने इलेक्ट्रोनिक मीड़िया की सोच पर व्यंग्य किया है। दूरदर्शन पर विभिन्न चैनलों के संचालक समझते है कि वे सब कुछ करने में समर्थ है। 'एक दुर्बल को लाएँगे' की दूरदर्शन की घोषणा उसके इसी अहंकार को सूचित करते है कि वह सामर्थ्यवान और शक्तिशाली है तथा अन्य अशक्त और दुर्बल है। कवि ने इन पंक्तियों के माध्यम से दूरदर्शन की इस दूषित मनोवृति का चित्रण व्यंग्यपूर्वक किया है।

प्रश्न 67 "कैमरे में बन्द अपाहिज" कविता के व्यंग्य पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर—"कैमरे में बन्द अपाहिज" कविता का प्रतिपाद्य किसी की पीडा का प्रदर्शन करके दूरदर्शन की प्रसार संख्या को बढ़ाने के कदम को अनुचित ठहराना है तथा दूरदर्शन के कार्यक्रमों के सोच और स्तर पर प्रकाश डालना है। इस कविता का उद्देश्य यह बताना भी है कि किसी की पीड़ा का बाजारीकरण कदापि उचित नहीं है। कविता में संदेश निहित है कि दीन–दुखियों की पीड़ा बेचने की चीज नहीं है। अप्रत्यक्ष रूप से कविता में अपाहिज–जनों के प्रति सहानुभूति तथा करूणा का भाव मन में रखने की प्रेरणा दी गई है।

प्रश्न 68 "कैमरे में बन्द अपाहिज" शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

उत्तर—कवि ने इस कविता में एक अपाहिज व्यक्ति की पीड़ा को चित्रित किया है। अपाहिज व्यक्ति की पीड़ा वह है जो उसको दूरदर्शन पर कैमरे के सामने उद्घोषक प्रश्नों का सामना करने से होती है। कैमरे के सामने

CBEO BHINDER
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

अनर्गल प्रश्न पुछे जाने से वह स्वयं को तमाशे की वस्तु समझता है ओर अपमान का अनुभव करता है। अपनी पीड़ा का सार्वजनिक प्रदर्शन उसके लिए अत्यन्त अपमानजनक है। इस प्रकार कविता का शीर्षक सर्वथा उपयुक्त प्रतीत होता है। अतः इस कविता को संवेदनहीन नहीं कहा जा सकता है।

प्रश्न 69 लुट्टन के पहलवान ने ऐसा क्यों कहा होगा कि मेरा गुरू कोई पहलवान नहीं यहीं ढ़ोल है?

उत्तर– लुट्टन ने किसी उस्ताद या गुरू से कुश्ती के दाँव–पेंच नहीं सीखे थे। उसे कुश्ती करते समय ढ़ोल की ध्वनि से उत्तेजना और संघर्ष करने की प्रेरेणा मिलती थी। चांद सिंह पहलवान के साथ कुश्ती लड़ते समय वह ढ़ोल की ध्वनि से दाँव–पेंच का अर्थ लेता रहा और उसी के अनुसार कुश्ती लड़कर विजयी हुआ। अतः वह ढ़ोल को ही अपना गुरू मानने लगा।

प्रश्न 70 गांव में महामारी फैलने और अपने बेटों के देहान्त के बावजूद लुट्टन पहलवान ढ़ोल क्यो बजाता रहा?

उत्तर– लुट्टन पहलवान ढ़ोल को अपना गुरू और सघंर्ष करने की शक्ति देने वाला मानता था। ढ़ोल की ध्वनि से उसमे साहस और उत्तेजना का संचार होता था। सन्नाटे में ढ़ोल जीवन्तता का संचार करता है। इसी कारण गाँव में महामारी फैलने और अपने बेटों के देहान्त के बावजूद भी वह जीवन में हिम्मत बनाये रखने के लिए ढ़ोल बजाता रहा।

प्रश्न 71 ढ़ोलक की आवाज का पुरे गाँव पर क्या असर होता था?

उत्तर– महामारी फैलने तथा कई लोगों की मौत होने से गाँव का वातावरण निराशा–वेदना से भरा था। रात के समय गाँव में सन्नाटा और भय बना रहता था। ढ़ोलक की आवाज रात में उस सन्नाटे और भय को कम करती थी महामारी से पीड़ीत लोगों को ढ़ोलक की ध्वनि से संघर्ष करने की शक्ति एवं उत्तेजना मिलती थी। इस प्रकार ढ़ोलक की आवाज का पुरे गाँव पर अतीव प्रेरणादायी असर होता था।

प्रश्न 72 प्रस्तुत कहानी के आधार पर गांव में व्याप्त महामारी की भयानक दशा का वर्णन कीजिए।

उत्तर– गाँव में फैली मलेरिया और हैजा महामारी से रोज दो–तीन लाशे उठने लगी थी। गाँव सूना लगता था। दिन करूण रूदन और हाहाकार का स्वर सुनाई देता था परन्तु रात में सन्नाटा रहता था लोग रात में अपनी झोपडियों में डरे–सहमें पडे रहते थे। माताओं में दम तोडते हुए पुत्र को अंतिम बार 'बेटा' कहकर पुकारने की भी हिम्मत नहीं होती थी।

प्रश्न 73 'गुरूजी कहा करते थे के जब मै मर जाऊँ तो मुझे चिता पर चित नहीं पेट के बल सुलाना'' ये शब्द लुट्टन पहलवान के जीवन के कौन–से पक्ष को उद्घाटित करते है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– अपने शिष्यों से लुट्टन पहलवान ने ये शब्द इसलिए कहे थे कि वह जीवन में किसी से नहीं हारा अर्थात् जीवन में सदैव संघर्ष करता रहा और बड़े–बड़े पहलवानों से भी चित्त नहीं हुआ था। अतः उसके ये शब्द अपने गौरवयुक्त जीवन के उज्जवल पक्ष को ही उद्घाटित करने वाले थे जो कि एक शिष्य द्वारा उसकी मृत्यु हो जाने पर कहे गये थे।

CBEO BHINDER
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

प्रश्न 74 ''राजा साहब ने कुश्ती बन्द करवाकर लुट्टन को अपने पास बुलवाया और समझाया'' राजा साहब ने लुट्टन को क्या समझाया?

उत्तर– राजा साहब ने लुट्टन को समझाया कि तुम हिम्मत रखने वाले युवा हो परन्तु शेर के बच्चे से लड़ना तुम्हारे बस की बात नहीं है। तुम इसे चुनौती देकर पागल मत बनों दस रूपये का नोट लेकर मेला देखों और चले जाओं इसी में तुम्हारी भलाई है।

.प्रश्न 75 कुश्ती में विजयी होने पर लुट्टन ने क्या किया?

उत्तर–कुश्ती में चांद सिंह को चारों खाने चित करके विजयी होने पर लुट्टन कूदता–फाँदता, ताल–ठोकता सर्वप्रथम बाजे वालों के पास गया और उसने ढ़ोलों को श्रद्धापूर्वक प्रणाम किया फिर वह दौड़कर राजा साहब के पास गया और उन्हे गोद में उठाकर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करने लगा।

प्रश्न 76 लुट्टन अपने पुत्रों को कैसी शिक्षा देता था?

उत्तर– लुट्टन अपने पुत्रों को कसरत करने की शिक्षा देता था। वह प्रतिदिन प्रातःकाल स्वयं ढ़ोल बजा–बजकर पुत्रों को उसकी आवाज पर पूरा ध्यान देने के लिए कहता था कि ''मेरा गुरू कोई पहलवान नहीं, यही ढ़ोल है। ढ़ोल की आवाज के प्रताप से ही मैं पहलवान हुआ। दंगल में उत्तर कर सबसे पहले ढ़ोलों को प्रणाम करना'' आदि शिक्षा देता था।

प्रश्न 77 पहलवान लुट्टनसिंह को राज दरबार क्यों छोड़ना पड़ा? बताइए

उत्तर– बूढ़े राजा साहब की मृत्यु के बाद राजकुमार ने विलायत से आकर राज्य शासन अपने हाथ में लिया और बहुत से परिवर्तन किए। दंगल का स्थान घोड़ों की रेस ने ले लिया। राजकुमार ने जब पहलवान और उसके पुत्रों का दैनिक भोजन–व्यय सुना तो उन्हे अनावश्यक बताया। इस प्रकार लुट्टन पहलवान को राज दरबार छोड़ना पड़ा।

प्रश्न 78 'पहलवान की ढ़ोलक'' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–प्रस्तुत कहानी में व्यवस्थाओं के परिवर्तन के पश्चात् की समस्याओं का स्पष्ट किया गया है। बदलते समय में लोक–कला और कलाकार अप्रासंगिक हो जाते है। उनका घटता महत्व सांस्कृतिक दृष्टि से चिंताजनक है। प्रस्तुत कहानी में राजा साहेब की जगह नए राजकुमार का आकर जम जाना सिर्फ व्यक्तिगत सत्ता परिवर्तन नहीं बल्कि जमीनी पुरानी व्यवस्था के पुरी तरह उलट जाने और उस पर सभ्यता के नाम पर एकदम नयी व्यवस्था के आरोपित हो जाने का प्रतीक है। यह 'भारत' पर 'इंडिया' के छा जाने की समस्या है जों लुट्टन पहलवान को लोक कलाकार के आसन से उठाकर पेट भरने के लिए हाय–तौबा करने वाली कठोर भूमि पर पटक देती है। मनुष्यता की साधना और जीवन–सौन्दर्य के लिए लोक कलाओं को प्रासंगिक बनाये रखने हेतु सबकी क्या भुमिका है? ऐसे कई प्रश्नों को व्यक्त करना इस कहानी का उद्देश्य है।

प्रश्न 79 सहर्ष स्वीकारा है' कविता किस काव्य संग्रह से ली गई है–

(अ) चाँद का मुँह टेढ़ा है (ब)भूरी–भूरी खरक धूल

(स) काठ का सपना (द) विपान **(ब)**

प्रश्न 80 'सहर्ष स्वीकारा है' कविता किसे समर्पित है–

(अ) पत्नी (ब) प्रेमिका (स) माँ (द) उपरोक्त सभी **(द)**

CBEO BHINDER

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

प्रश्न 81 नमक' कहानी के लेखक है–

(अ) प्रेमचन्द (ब) रजिया सज्जाद जहीर

(स) महादेवी वर्मा (द) हरिवंशराय बच्चन **(ब)**

प्रश्न 82 सिक्ख बीबी ने सफिया से लाहौर से क्या मंगवाया था–

(अ) गुड़ (ब) नमक (स) किन्नू (द) अमरूद **(ब)**

प्रश्न 83 'शिरीष के फूल' किस विधा की रचना है–

(अ) कहानी (ब) निबंध (स) काव्य (द) कथा **(ब)**

प्रश्न 84 लेखक ने 'शिरीष के फूल' में शिरीष की तुलना किन महापुरूषों से की है–

(अ) महाकवि कालीदास (ब) रविन्द्रनाथ टैगोर

(स) महात्मा गांधी (द) उपरोक्त सभी **(द**

प्रश्न 85 सहर्ष स्वीकारा है' कविता का प्रतिपाद्य/संदेश क्या है?

उत्तर–'सहर्ष स्वीकारा है'में कवि ने जीवन के सब सुख–दुख, संघर्ष–अवसाद, उठा–पटक को सम्यक भाव से अंगीकार करने का संदेश दिया है।

प्रश्न 86 सहर्ष स्वीकारा है' कविता किसको स्वीकारने की प्रेरणा देती है? तथा क्यो?

उत्तर–'सहर्ष स्वीकारा है' कविता हमको जीवन मे प्राप्त प्रत्येक वस्तु को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करने की प्रेरणा देती है। हमे जीवन में मिलने वाले सुख–दुख, हार, जीत, निन्दा, स्तूति, गरीबी–अमीरी, सबको समान रूप से सहर्ष स्वीकार करना चाहिए।

प्रश्न 87 कवि तथा उसके प्रियतम में कैसा संबंध है?

उत्तर– कवि तथा उसके प्रियतम के मध्य स्नेह और प्रेम का संबंध है, कवि कहता है कि उसको जीवन में जो कुछ मिला है वह प्रिय की देन है।

प्रश्न 88 नमक की पुड़िया ले जाने के संबंध में सफिया के मन में क्या द्वन्द्व था?

उत्तर– सफिया ने सिक्ख बीबी को लाहौरी नमक लाने का वचन दिया था पर पाकिस्तान से भारत नमक लाना गैर कानुनी था। सफिया किसी भी कीमत पर नमक ले जाना चाहती थी। यही द्वन्द्व उसके मन में था।

प्रश्न 89 'नमक' कहानी के माध्यम से कहानीकार पाठको को क्या सन्देश देना चाहती है?

उत्तर–'नमक' कहानी के माध्यम से कहानीकार कहना चाहती है कि राजनीतिक आधार पर किसी देश का बँटवारा उसको नक्शे में तो अलग–अलग कर सकता है लेकिन जनता के दिलों को नहीं बाँट सकता है।

CBEO BHINDER

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

प्रश्न 90 'नमक' कहानी की नायिका सफिया की चारीत्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए

उत्तर– (1) उदार विचार वाली
(2) मानवतावादी व उच्च विचारों की पोषक
(3) आदर्शवादी
(4) भावनाप्रधान महिला

प्रश्न 91 लेखक ने शिरीष को 'कालजयी अवधूत' (सन्यासी) की तरह क्यो माना है?

उत्तर– कालजयी उसे कहते है जो समय के साथ परिवर्तन से अप्रभावी रहता है। जीवन में आने वाले सुख–दुख, उत्थान–पतन, हार जीत उसे प्रभावित नहीं कर पाते। वह इनमें सन्तुलन बनाकर जीवित रहता है। यह गुण अवधूत अर्थात् सन्यासी में होते है। शिरीष का वृक्ष भी भीषण गर्मी और लू में भी हरा–भरा और फूलों से लदा रहता है। इस कारण 'कालजयी अवधूत' की तरह माना है।

प्रश्न 92 "हाय वह अवधूत आज कहाँ है?" लेखक ने यहा किसे स्मरण किया है व क्यो?

उत्तर– लेखक ने उपर्युक्त वाक्य महात्मा गांधी के लिए कहा है। आज देश में हिंसा, असहिष्णुता और कठोरता का वातावरण व्याप्त है ऐसे समय में देश के मार्गदर्शन के लिए महात्मा गांधी जैसे अवधूत की प्रबल आवश्यकता है।

प्रश्न 93 लेखक के मन में शिरीष को देखकर हूक क्यो उठती है?

उत्तर– आज भारत में भय, भूख व भ्रष्टाचार का बोलबाला है। लेखक जब–जब शिरीष को देखता है, तब–तब उसके मन में हूक उठती है कि वह अवधूत गांधी आज कहाँ है।

प्रश्न 94 मैं और और जग और कहाँ का नाता– कविता मे और शब्द की विशेषता बताइए।

उत्तर – मैं और,और जग और कहाँ का नाता–कविता मे और शब्द का तीन बार प्रयोग हुआ है प्रथम तथा तृतीय बार प्रयुक्त और का अर्थ है तथा यह अव्यय है और शब्द की आवृति होने तथा उसके अर्थ भिन्न – भिन्न होने से यहाँ यमक अलंकार है। कवि कहना चाहता है कि त्याग और प्रेम पर भरोसा करने वाले कवि की भोगवादी संसार से कोई समानता नही है।

प्रश्न 95 दिन जल्दी–जल्दी ढलता है कि आवृत्ति से कविता की किस विशेषता का पता चला है ?

उत्तर– दिन जल्दी–जल्दी ढलता है कि आवृत्ति से कविता की दो विशेषताओं का पता चला है

1– इस कविता की रचना गीत शैली मे है इस कारण स्थायी या टेक दिन जल्दी–जल्दी ढलता है को बार बार कविता मे दोहराया गया है।

2– जीवन छोटा है करने को काम बहुत है इससे मन में जो व्याकुलता हो रही है उससे लग रहा कि जल्दी–जल्दी ढल रहा है कविता मे हुई आवृति इस मनोवैज्ञानिक तथ्य को प्रकट करती है।

प्रश्न 96 निज उर के उद्‌गार और निज उर के कवि का आशय क्या है ?

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

CBEO BHINDER

उत्तर– कवि का आशय है कि वह दुसरो को खुश करने के लिए कविता नही लिखता उसकी कविता में **उसके मन के भाव प्रकट होते है। कविता में प्रकट उसके प्रेम भरे भाव उसकी और से लोगो को दी** गई **भेंट** है।

प्रश्न 97 सुख–दुख के प्रति कवि का क्या भाव हैं ?

उत्तर– कवि सुख–दुख को समान भाव से ग्रहण करता है। वह सुख में प्रसन्न तथा दुख में दुखी नही होता वह गीत के सुखे– दुखे समे कृत्वा से प्रभावित है।

प्रश्न 98 सत्य को जानना कवि की दृष्टि में असम्भव क्यो है ?

उत्तर– कवि का मानना है कि सत्य की खोज कठिन कार्य है। ज्ञानी और अज्ञानी दोनो ही सत्य की खोज में लगे है परन्तु उस तक नही पहुँच पाते है अज्ञानी तो अज्ञानी है ही परन्तु ज्ञानियो को भी वैसा सच्चा ज्ञान नही है जो सत्यान्वेषण के लिए आवश्यक होता है वे ज्ञानी होने के मिथ्या अंहकार से ग्रस्त है अतः सत्य को नही जान पाते।

.प्रश्न 99 भूपों के प्रसाद किस पर निछावर है तथा क्यों?

उत्तर– राजाओ के महलो की सुख–सुविधा को आकर्षित नही करती वह तो अपनी झोपडी खण्डहर से हि संतुष्ट है। आत्म–संतोष के कारण राजमहलो को वह खण्डहर पर निछावर करता है।

.प्रश्न 100 आत्म–परिचय कविता का प्रतिपाद्य क्या है।

उत्तर– आत्म–परिचय कविता में कवि ने संसार से अपना सम्बन्ध **प्रीति**–कलह **को** बताया है उसका जीवन विरोधों का सामंजस्य है। इनको साधते–साधते एक बेखुदी मस्ती और दीवानगी उसके व्यक्तित्व में उत्तर आई है यहाँ कवि ने दुनिया के साथ अपने द्विधात्मक और द्वन्द्वात्मक सम्बन्ध के मर्म का उद्घाटन किया है। आत्मपरिचय कविता का प्रतिपाद्य संसार से प्रेम करना उसके हित की चिन्त करना स्वय कष्टो में रहकर भी संसार के प्रति अपना कर्तव्य पूरा करना किसी भी निन्दा–स्तुति से अप्रभावित रहकर सभी के साथ समान रूप से प्रेम का व्यवहार करना तथा अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित रहकर आगे बढ़ने की प्रेरणा देना है।

प्रश्न 101 भक्तिन अपना वास्तविक नाता लोगों से क्यों छुपाती थी ? भक्तिन को यह नाम किसने और क्यों दिया होगा ?

उत्तर– भक्तिन का वास्तविक नाम लछमिन अर्थात लक्ष्मी **था। लक्ष्मी को** धन और सौभाग्य की देवी माना जाता है। दीपावली पर उसकी पूजा होती है। भक्तिन का जीवन निर्धनता से भरा हुआ था दुर्भाग्य ने कभी उसका पीछा नही छोड़ा अपना घर–द्वार छोड़कर वह महादेवी की सेविका बनकर रह रही थी भक्तिन को लगता था कि उसका नाम उसकी दशा से मेल नही खाता इस कारण वह इस नामको लोगों को बताना नही चाहती थी वह उसे छिपाती थी।

प्रश्न 102 भक्तिन द्वारा शास्त्र के प्रश्न को सुविधा से सुलझा लेने का उदाहरण लेखिका ने क्या दिया ?

उत्तर– भक्तिन ने अपना सिर उस्तरे से मुंडवा लिया था। लेखिका को स्त्री का सिर मुंडाना अच्छा नही लगता था। उनके मना करने पर भक्तिन ने अपने काम को शास्त्रो के अनुकुल बताया–कहा यह शास्त्र में लिखा है। क्या **है** यह पुछने पर उसने कहा तीरथ गए मुँडा**ये** सिध्द महादेवी जानती थी कि शास्त्र में ऐसा कुछ नही लिखा परन्तु वह चुप रही और भक्तिन का सिर मुँडाने का काम जारी रहा।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

CBEOBHINDER

प्रश्न 103 महादेवी ने भक्तिन के जीवन को कितने परिच्छेदों में बाँटा है ? उसके जीवन के प्रथम परिच्छेद का वर्णन संक्षेप में कीजिए।

उत्तर– महोदेवी ने भक्तिन के जीवन को चार परिच्छेदों में बाटा है। उसके जीवन के प्रथम परिच्छेद में बचपन से लेकर ससुराल जाने तक का समय लिया गया है। भक्तिन एक ग्वालिन की बेटी थी उसका नाम लक्ष्मी था वह अपने पिता की इकलौती बैटी थी उसकी माता की मृत्यु हो जाने के कारण विमाता की छत्र छाया में पली–बढ़ी थी पिता ने पाँच वर्ष की अवस्था में उसका विवाह कर दिया था नौ वर्ष की आयु होने पर उसका गौना हो गया था।

प्रश्न 104 भारतीय समाज में महिलाओं को कैसा स्थान प्राप्त है ? आपकी दृष्टी में यह कितना उचित है।

उत्तर– भारतीय समाज में महिलाओं को द्वितीय श्रेणी का स्थान प्राप्त है। समाज में पुरूषो की प्रधानता अब भी दिखाई देती है। **लड़कियों** की तुलना में **लड़कों** को अच्छा भोजन और शिक्षा मिलती है बेटी को जन्म देने वाली माता को आज भी **तिरस्कार** प्राप्त होता है। अनेक बार तो **उसको** अत्याचार भी सहने पड़ते है पहले तो बेटी को जन्म लेते ही मार डाला जाता था अब भी कन्या भ्रूण हत्याएँ खूब होती है। एक सभ्य समाज में महिलाओं के साथ यह भेदभाव अनुचित ही नही निन्दनीय भी है।

प्रश्न 105 भक्तिन के विधवा होने पर उसके परिवार वाले क्या चाहते थे भक्तिन ने इसका विरोध किस प्रकार किया ?

उत्तर– मात्र उनतीस वर्ष की अवस्था में भक्तिन विधवा हो गयी थी **बड़ी** बेटी का विवाह करने के बाद उसका पति मर गया था। भक्तिन की सोना उगलने वाली खेती हष्ट पुष्ट दुधारू गाय –भैसो तथा फलदार वृक्षो को देखकर उसके जेठ जठौत जलते थे वे उसकी सम्पति पर अधिकार करना चाहते थे भक्तिन सब समझती थी वह दूसरी शादी करना नही चाहती थी उसने अपने सिर के बाल मुँडालिए और गुरू **से** मंत्र लेकर गले में कंठी पहन ली अपने बडे दामाद को बुलाया और घर जमाई बना लिया।

प्रश्न 106 भक्तिन की चरित्रगत विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर– वह एक स्नेही महिला थी वह महादेवी से अत्यन्त स्नेह करती थी तथा सदा उनका हित चाहती थी यात्रा में उनके साथ रहकर पहाड़ी रास्तो पर उनके आगे तथा धूल भरे रास्तो पर उनके पिछे चलती थी वह जेल जाने से डरती थी परन्तु महादेवी के साथ जेल जाने को तैयार हो गई वह एक पल भी उनका साथ नही छोड़ना चाहती थी।

प्रश्न 107 मैं अपनी असुविधाएँ छिपाने लगी सुविधाओं की चिन्ता करना तो दूर की बात है लेखिका ने अपनी चिन्ता करना क्यो छोड़ दिया ?

उत्तर महादेवी का स्वास्थ्य गिर रहा था अतः भक्तिन को सेवा के लिए रखा था महादेवी भक्तिन की सरलता से बहुत प्रभावित हुई इसलिये उन्होने अपनी असुविधाओं को बताना ही छोड़ दिया और अपनी चिन्ता करना भी छोड़ दिया।

प्रश्न 108 नरो वा कुंजरो वा कहने में भी विश्वास नही करती। कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

CBEO BHINDER

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

उत्तर– नरो वा कुंजरो वा का अर्थ है मनुष्य है या हाथी। महाभारत के युध्द में युधिष्ठिर से कृष्ण ने कहा की यदि द्रोणाचार्य को उनके पुत्र की मृत्यु का समाचार सुनाया जाये तो यह युध्द बंद कर देगे उसी समय अश्वत्थामा नाम का एक हाथी मारा गया था। युधिष्ठिर ने द्रोणाचार्य के पास जाकर जोर से कहा अश्वत्थामा मारा गया लेकिन नरो वा कुंजरो वा धीरे कहा इस प्रकार युधिष्ठिर ने असत्य को सत्य के रूप में कहा इस सिध्दात को भक्तिन स्वीकार नही करती थी।

प्रश्न 109 संसार में कष्टो को सहते हुए भी खुशी और मस्ती का माहौल कैसे पैदा किया जा सकता है ?

उत्तर –सुख दुःख में लिप्त न होकर उनको समभाव से ग्रहण करके ही खुशी और मस्ती का माहौल पैदा किया जा सकता है।

प्रश्न 110 शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ कवि ने ऐसा क्यों कहा है ?

उत्तर– कवि का अभिप्राय है **कि** वह वाणी में कोमलता और मधुरता और शीतलता का पक्षधर है। वह अपनी बात कोमल वाणी में कहता है किन्तु इस कोमल वाणी में उसके ह्दय की वेदना छिपी है।

प्रश्न 111 भक्तिन ने विधवा होने के पश्चात् अपना जीवन किस प्रकार बिताया ?

उत्तर – विधवा होने के पश्चात् भक्तिन ने अपना जीवन सादगी में बिताया उसने दुसरा विवाह नही किया उसने गुरू मंत्र लिया सिर के बाल मुंडवा लिये तथा गले में कंठी पहन ली फिर बाद में महादेवी की सेवा करने में दिन रात लगी रहती थी।

प्रश्न 112 जीवन के दुसरे परिच्छेद में भी सुख की अपेक्षा दुःख ही अधिक है। लेखिका के अनुसार दुसरा परिच्छेद कौन–सा है।

उत्तर– भक्तिन के विवाह के बाद ससुराल पहुँचने से उसके जीवन का दुसरा परिच्छेद आरम्भ हुआ उसकी सास तथा जेठानियाँ कमाऊ पुत्रों की माताएँ थी परन्तु भक्तिन ने तीन कन्याओं को जन्म दिया इस अपराध के कारण उसे घर का सारा कार्य करना पड़ता था।

प्रश्न 113 'उषा' कविता के रचयिता का नाम लिखिए।

उत्तर- उषा' कविता के रचयिता कवि का नाम शमशेर बहादुर सिंह है।

प्रश्न 114 कवि ने प्रातः के नभ को नीला शंख जैसा क्यों बताया है ?

उत्तर- कुछ अंधेरा, कुछ हल्का उजाला एवं स्वच्छ रहने से कवि ने प्रातः के नभ को नीला शंख जैसा बताया है।

.प्रश्न 115 कवि ने सूर्य के लिए 'गौर देह' क्यों कहा है ?

उत्तर- प्रातः चमकते हुए सूर्य के श्वेत बिम्ब को लक्ष्य कर कवि ने उसे गोरी देह वाला बताया है।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

.प्रश्न 116 उषा का जादू टूटने का क्या तात्पर्य है ?

उत्तर – उषाकाल में जो प्राकृतिक सौन्दर्य एवं विशेष आकर्षण होता है, वह सूर्योदय के बाद समाप्त हो जाता है—जादू टूटने का यही तात्पर्य है।

प्रश्न 117 'उषा' कविता में प्रयुक्त उपमान-योजना स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – 'उषा' कविता में कवि ने उषा को सुन्दर एवं चतुर गृहिणी बताया है, जो सुबह अपने चौके को लाल मिट्टी से लीपती है। प्रातः नीले आकाश में उगते हुए सूर्य को किसी की झिलमिल गौर देह का उपमान चित्रित किया गया है। इसमें आकाश को स्लेट और लाल किरणों को लाल खड़िया की लकीरें बताकर नया उपमान-बिम्ब दर्शाया गया है।

प्रश्न 118 'उषा' कविता गाँव की सुबह का गतिशील चित्र है ?" स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- शमशेर बहादुर सिंह ने 'उषा' कविता में प्रातःकाल के आकाश को राख से लीपा हुआ चौका बताया गया है। फिर उसे लाल केसर से धुली हुई बहुत काली सिल और स्लेट पर लाल खड़िया चाक से मला हुआ बताया गया है। इसमें प्रयुक्त 'चौका' शब्द गाँवों में रसोईघर की फर्श को कहते हैं। गाँवों में महिलाएँ चौके को स्वच्छ रखने के लिए उसे मिट्टी या राख आदि से लीपती हैं। गाँव में रसोईघर की फर्श कच्ची होती हैं, इसलिए उसे लीपा-पोता जाता है। रसोईघर में सिल अर्थात् मिर्च-मसाला आदि पीसने का सिलबट्टा होता है तथा बच्चों के अक्षर ज्ञान के लिए स्लेट काम में ली जाती है। कवि ने सिल और स्लेट का उपमान रूप में प्रयोग किया है और ये उपमान भी ग्रामीण परिवेश से सम्बन्धित हैं।

प्रश्न 119 'उषा' कविता में किसका वर्णन किया गया है ?

उत्तर – 'उषा' कविता में कवि ने भोर के प्राकृतिक परिवेश का वर्णन किया हैं।

प्रश्न 120 'उषा' कविता के शिल्प-सौन्दर्य की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर-'उषा' कविता में बिम्बधर्मी प्रयोग करते हुए सूर्योदय से ठीक पहले के पल-पल परिवर्तित परिवेश का शब्द-चित्र उपस्थित किया गया है। इसमें नवीन उपमानों, बिम्बों और नये प्रतीकों के द्वारा शिल्प-सौन्दर्य को निखारा गया है।

प्रश्न 121 'बहुत काली सिल जरा-से लाल केसर से कि जैसे धुल गई हो।' इसका काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – इसमें कवि ने काली सिल और लाल केसर का उपमान नये रूप में प्रयुक्त किया है। उषाकाल में धूमिल आकाश को काली सिल और सूर्य की किरणों को लाल केसर तथा उनसे आकाश के धुल जाने या कालिमा हट जाने का वर्णन सर्वथा नये बिम्ब रूप में दर्शाया गया है।

प्रश्न 122 'स्लेट पर या लाल खड़िया चाक मल दी है किसी ने','उषा' कविता की उपर्युक्त पंक्ति बाल मनोविज्ञान पर प्रकाश डालती है। कैसे? समझाइए।

उत्तर- पहले बच्चों की शिक्षा देने के लिए स्लेट का प्रयोग होता था। उस पर खड़िया से बनी चाक-बत्ती द्वारा अक्षर लिखे जाते थे। बच्चे कभी खेल-खेल में स्लेट पर लिखते और मिटाते थे। 'उषा' कविता की इस पंक्ति का सम्बन्ध बच्चों से होने के कारण हम कह सकते हैं कि यह बाल मनोविज्ञान पर प्रकाश डालती है।

CBEO BHINDER

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

.प्रश्न 123 फ़िराक की रुबाई के आधार पर माँ के वात्सल्य भाव का वर्णन कीजिए।

उत्तर- फ़िराक ने एक माँ के अपने बच्चे के प्रति प्रेम अर्थात् वात्सल्य को अपनी रुबाई में प्रकट किया है। आँगन में गोद में उठकार बच्चे को हाथों पर झुलाना, बार-बार हवा में उछालना, उसे स्वच्छ पानी से कोमलता के साथ छींटे डालकर नहलाना, उसके उलझे बालों में कंघी करना, उसको दोनों घुटनों के बीच में पकड़कर कपड़े पहनाना इत्यादि माँ के कार्यों का इस रुबाई में सजीव चित्रण हुआ है। इस रुबाई में माँ के वात्सल्य का चित्र सजीव हो उठा है ।

.प्रश्न 124 बच्चे की चाँद लेने की ज़िद को माता किस प्रकार अपनी ममता भरी समझ से पूर्ण करती है? फ़िराक गोरखपुरी की रुबाइयों के आधार पर समझाइए।

उत्तर- बालक आकाश में खिले चाँद को लेकर उससे खेलना चाहता है। वह उसे लेने के लिए अपनी माँ से ज़िंद कर रहा है। माँ उसकी हठ चतुराई के साथ पूरा करती है। वह बच्चे के हाथों में एक दर्पण देकर उसमें चन्द्रमा की परछाई दिखाती हैं और कहती है कि देखो, चाँद अब तुम्हारे हाथों में आ गया है।

प्रश्न 125 "फ़िराक की रुबाइयों में हिन्दी, उर्दू और लोकभाषा का आकर्षक पुट लगाया गया है। " सोदाहरण सिद्ध कीजिए।

उत्तर- उर्दू शायरी का एक बड़ा हिस्सा रूमानियत, रहस्य और शास्त्रीयता से बँधा रहा है। उसमें लोक-जीवन के पक्ष बहुत कम उभरे हैं। फ़िराक की शायरी में लोक-जीवन का पक्ष उभरा है। सामाजिक दुख-दर्द व्यक्तिगत अनुभूति बनकर उनकी शायरी में ढल गए हैं। फ़िराक ने भारतीय संस्कृति तथा लोकभाषा के प्रतीकों से जोड़कर अपनी शायरी का महल खड़ा किया है। फ़िराक ने उर्दू शायरी के चले आ रहे स्वरूप के साथ-साथ नयी भाषा तथा नए विषयों से अपनी शायरी को जोड़ा है।

"हम हों या किस्मत हो हमारी दोनों को इक ही काम मिला
किस्मत हमको रो लेवे हैं हम किस्मत को रो ले हैं। "

प्रश्न 126 फिराक गोरखपुरी की इन पंक्तियों के भाव को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- शायर ने कहा है कि उसको तथा उसकी किस्मत को एक जैसा ही काम करने को मिला है। वह अपनी किस्मत के खराब होने का रोना रोता रहता है। उधर उसकी किस्मत भी इस बात से दुःखी होकर रोती है कि कैसे आदमी से पाला पड़ा है जो अपनी अकर्मण्यता का दोष मुझ पर लगाता रहता है।

.प्रश्न 127 'उसको उतना ही पाते हैं, खुद को जितना खो ले हैं'-फ़िराक गोरखपुरी की इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर- फ़िराक गोरखपुरी ने इस पंक्ति में प्रेम की विशेषता का वर्णन किया है। प्रेम में त्याग का बहुत महत्त्व होता है। प्रेमी-प्रेमिका का एक-दूसरे के प्रति जितना त्याग और समर्पण व्यक्त करते हैं, उतना ही उनका प्रेम प्रगाढ़ होता है। अपने अन्दर के अहंकार को मिटाकर सच्चा समर्पण करने से ही प्रेम की प्राप्ति होती है।

.प्रश्न 128 शायर राखी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह कहकर क्या भाव व्यंजित करना चाहता है?

CBEO BHINDER
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

उत्तर-शायर कहता है कि राखी भाई-बहिन के पवित्र रिश्ते की प्रतीक है। बहिनें चमकदार मुलायम रेशों वाली राखियाँ खरीदती हैं, ताकि उनकी चमक एवं प्रेम-सौहार्द्र के समान भाई-बहिन के अटूट सम्बन्ध की चमक एवं प्रेम सौहार्द अर्थात् उन्हें निभाने का उत्साह-उल्लास सदा बना रहे।

प्रश्न 129 टिप्पणी करें (क) गोदी के चाँद और गगन के चाँद का रिश्ता।
(ख) सावन की घटाएँ व रक्षाबंधन का पर्व

उत्तर-(क) गोदी का चाँद नन्हा प्यारा शिशु होता है। माँ अपने प्यारे शिशु को चाँद से भी अधिक प्यारा मानती है। आकाश का चाँद बच्चों को प्यारा लगता है और वे उसे खिलौना मानकर पाने के लिए मचलने लगते हैं। इन दोनों की स्थितियों में यही अन्तर है।

(ख) रक्षाबन्धन का त्योहार श्रावण की पूर्णिमा पर पड़ता है। इस समय आकाश में बादल छाये रहते हैं, बिजली चमकती रहती है। आकाश में बादलों की उमड़-घुमड़ के साथ भाई-बहिन के हृदय में पवित्र प्रेम-प्यार का उल्लास बना रहता है।

प्रश्न 130 फिराक की गजलों में प्रकृति को किस रूप में चित्रित किया गया है?

उत्तर-फिराक की गजलों में प्रकृति का चित्रण मानवीकरण शैली में हुआ है। प्रातःकाल कलियाँ अपनी गाँठें धीरे-धीरे खोलती हैं तथा रंग व सुगंध के सहारे उड़ने को आतुर हैं। तारे आँखें झपकाते-से प्रतीत होते हैं। रात का सन्नाटा प्रकृति के रहस्य को मौन स्वर में बोलता हुआ किसी की याद दिलाता सा प्रतीत होता है।

प्रश्न 131 रुबाइयों के आधार पर घर-आँगन में दीपावली के दृश्य-बिम्ब को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-फिराक गोरखपुरी ने दीपावली का दृश्य-बिम्ब इस प्रकार चित्रित किया है— शाम का समय, लिपा-पुता एवं स्वच्छ घर-आँगन, माँ अपने बच्चों के लिए जगमगाते चीनी के खिलौने सजाती और प्रसन्नता से दीपक जलाती है तथा बच्चों की खिलखिलाहट से पूरा घर-आँगन जगमगा जाता है।

.प्रश्न 132 'ये कीमत हम अदा करे हैं' फ़िराक ने अपने प्रेम के सम्बन्ध में क्या कहा है?

उत्तर- फ़िराक अपनी प्रेमिका के प्रेम में पड़ा है। अपने गहरे प्रेम के प्रतिदान स्वरूप वह प्रेम दीवाना हो गया है। प्रेम के लिए दीवानगी की यह कीमत वह खुशी-खुशी और अपने पूरे होश साथ अदा करने को तैयार है।

प्रश्न 133. 'पतंग' शीर्षक कविता से प्रतिपाद्य या मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– शरद ऋतु में धरती एवं आकाश स्वच्छ हो जाते हैं। ऐसे में पतंग उड़ाते बच्चों का उल्लास एवं उत्साह देखने लायक हो जाता है। इस तरह प्रस्तुत कविता का प्रतिपाद्य ऋतु–सौन्दर्य के साथ बाल–मन के उल्लास व उत्साह का चित्रण करना रहा है।

प्रश्न 134 'पतंग' कविता में शरद् ऋतु की क्या विशेषता बतायी गई है?

CBEO BHINDER
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

उत्तर– 'पतंग' शीर्षक कविता में शरद् ऋतु की यह विशेषता बतायी गयी है कि इस ऋतु में आकाश स्वच्छ रहता है, धरती भी धुली हुई–सी रहती है। हवा मन्द–मन्द चलती है और धूप में ताजी चमक रहती है। यह ऋतु सुहावनी एवं आनन्ददायी लगती है।

प्रश्न 135 "किशोर और युवा वर्ग समाज का मार्गदर्शक होता है।" 'पतंग' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– किशोर और युवा–वर्ग अपनी धुन में मनचाहा काम करता है। वे निडर होकर खतरों एवं बाधाओं का सामना कर साहस और हिम्मत के सहारे जीवन में उन्नति करना चाहते हैं। ऐसे निर्भीक, साहसी कार्य–कलापों से ही समाज को प्रगति का मार्गदर्शन मिलता है।

प्रश्न 136. बच्चे और भी निडर कब हो जाते हैं?

उत्तर– पतंग उड़ाते समय बच्चे जब कभी छत की खतरनाक दीवारों एवं मुंडेरों से नीचे गिर जाते हैं और उस दुर्घटना में चोटग्रस्त होने से बच जाते हैं, तब वे पूरी तरह निडर हो जाते हैं और फिर दुगुने जोश से पतंगें उड़ाने लगते हैं।

प्रश्न 137. कविता 'पतंग' के माध्यम से कवि क्या कहना चाहते हैं?

उत्तर– 'पतंग' एक लम्बी कविता है। यह कविता आलोक धन्वा के एकमात्र काव्य–संग्रह 'दुनिया रोज बनती है' से ली गई है। पतंग के माध्यम से कवि ने बच्चों की पतंग उड़ानें की उत्साही प्रवृत्ति को बताया है। बाल–क्रीड़ाओं एवं प्रकृति में परिवर्तित सुंदर बिम्बों का उपयोग किया गया है। पतंग उड़ाना बच्चों का बहुरंगी सपना है। आसमान में उड़ती पतंगें बच्चों की इच्छाओं की उड़ान को गती देती है साथ ही निडर, सावधान व खतरों से खेलनें के लिए उत्साही बनाती हैं। गिर कर उठने का हौंसला तथा तुरंत तेज गति से फिर से अपने पतंगों के काटने, उड़ाने, ढील देने जैसे लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु तत्पर करती हैं। बच्चों का उत्साह प्रकृति को अपना साथ देने के लिए मजबूर कर देता है इसीलिए कवि ने कहा भी कि ''पृथ्वी और भी तेज घुमती हुई आती है, उनसे बेचैन पैरों के पास।'

CBEO BHINDER

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

प्रश्न 138. कविता 'पतंग' में बिम्बों के द्वारा काव्य–सौन्दर्य प्रकट किया गया है। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– इस कविता में सुंदर बिम्बों के माध्यम से बच्चों की बाल–सुलभ चेष्टाओं का प्रभावी चित्रण हुआ है। काव्य में बिम्ब वह मानसिक चित्र है जो कल्पना द्वारा अनुभूत किया जाता है। यह इन्द्रियों पर आधारित होता है जिनकी सहायता से हम काव्य के मूर्त रूप की अनुभुति करते हैं। कविता में व्यक्त बिंब सौंदर्य निम्न है– शरद ऋतु की सुबह की तुलना खरगोश की लाल–भूरी आँखों से की गई है। शरद ऋतु को उत्साही बालक के समान बताया गया है। तितलियों की नाजुक दुनिया का बिंब पतंगों की रंग–बिरंगी कोमल दुनिया से बाँधा गया है। 'पतंग' कविता में बिंबों की रंगीन दुनिया चारों तरफ व्याप्त है, यह एक ऐसी दुनिया है जहां शरद ऋतु का चमकीला इशारा है, दिशाओं में मृदंग बजते हैं। इस तरह दृश्य, चाक्षुष, स्थिर, गतिशील और श्रव्य बिम्ब प्रस्तुत हुए हैं।

प्रश्न 139. 'रोमांचित शरीर का संगीत' का जीवन के लय से क्या संबंध है?

उत्तर– जब कोई व्यक्ति किसी काम में पूरी तरह निमग्न हो जाता है, तब उससे उत्पन्न खुशी और उत्साह रोमांच में बदल जाता है और उस रोमांच के कारण उस काम में एक लय आ जाती है। उस रोमांचित क्षण में वह लय एक संगीत की तरह अतीव आनन्ददायक लगती है। अतएव शरीर का संगीत रोमांच से सम्बंध रखता है।

प्रश्न 140 'महज एक धागे के सहारे, पतंगों की धड़कती ऊँचाइयाँ' उन्हें (बच्चों को) कैसे थाम लेती हैं? चर्चा करें।

उत्तर– पतंग उड़ाते समय बच्चे डोरी को हिलाते और खींचते–छोड़ते रहते हैं। रहते हैं। इससे पतंग ऊँची उठती जाती है। बच्चे पतंग और ऊँची जावे, इस प्रयास में रहते हैं। इस क्रम में बच्चे छतों के किनारे तक आ जाते हैं तब पतंगों के उठने–बैठने का क्रम बच्चों को अनजान खतरों से दूसरी तरफ खींच कर ले जाती है। इसी कारण वे अपने हाथ में डोरी को थामे रखकर अतीव उत्साहित होते हैं।

प्रश्न 141 'पतंगों के साथ–साथ वे भी उड़ रहे हैं। –बच्चों का उड़ान से कैसा संबंध बनता है?

CBEO BHINDER
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

उत्तर– जब पतंगें उड़ती हैं, तो बच्चों का मन भी उनके साथ उड़ने लगता है। उनमें गतिशीलता आ जाती है और उमंग–उत्साह से भरकर वे छतों की दीवारों पर खतरनाक होने पर भी चढ़ जाते हैं। उनके शरीर में पतंगों के समान हल्कापन आ जाता है। इसी कारण कहा गया है कि पतंगों के साथ बच्चे भी उड़ते हैं।

प्रश्न 142. 'सबसे तेज़ बौछारें गयीं, भादो गया' के बाद प्रकृति में जो परिवर्तन कवि ने दिखाया है, उसका वर्णन अपने शब्दों में करें।

उत्तर– भादों मास में बारिश की तेज बौछारें पड़ती हैं। भादों के बीतते ही बरसात का मौसम समाप्त हो जाता है। तब आकाश एकदम निर्मल और स्वच्छ बन जाता है। शरद् ऋतु प्रारम्भ हो जाती है और तब सवेरा खरगोश की लाल–भूरी आँखों के समान खिला–खिला तथा चमकीला लगता है। धरती पर धूल और रास्तों में कीचड़ नहीं रहता है । आसपास का सारा वातावरण चमकने लगता है। हवा भी शीतल और सुगन्धित बहने लगती है और फूल–पौधों पर तितलियाँ मँडराने लगती हैं। और पतंगबाजी का मौसम आ जाता है।

(जैन्द्र कुमार) बाजार दर्शन

प्रश्न 143 'वे लोग बाजार का बाजारूपन बढ़ाते है' – 'बाजार–दर्शन' अध्याय के आधार पर बताइये कि 'वे लोग' किसके लिए कहा गया है और वे बाजारूपन कैसे बढ़ाते हैं ?

उत्तर– 'वे लोग' का आशय है –क्रय–श्शक्ति से सम्पन व्यक्ति । इस तरह के लोग अपनी क्रय–श्शक्ति से अनावश्यक वस्तुओं की भी खरीददारी करते है । इस कारण बाजारवाद, छल–कपट, मनमान मूल्य लेना आदि प्रवृतियों को बल मिलता हैं । अतः असीमित पर्चेजिंग पावर रखने वाले लोग का बाजारूपन बढ़ाते हैं।

प्रश्न 144 'बाजार में एक जादू है ।' लेखक के अनुसार बाजार का जादू किस पर नहीं चलता है ? बताइये ।

उत्तर–जिन लोगो की क्रय–शक्ति होने पर भी मन भरा हुआ हो अर्थात् उसमें किसी चीज को लेने का निश्चित लक्ष्य हो, उपयोग सामान खरीदने की जरूरत हो और अन्य कोई लालसा न हो ऐसे लोगों पर बाजार का जादू नहीं चलता है।

प्रश्न 145. 'बाजार जाओं तो खाली मन न हो ।' इससे लेखकर का क्या आशय हैं ?

CBEO BHINDER
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

उत्तर–इसका आशय यह है कि मन में अमुक चीज लेने का लक्ष्य हो, मन उसी चीज तक सीमित हो तथा बाजार में फैली हुई नाना चीजों के प्रति कोई आकर्षण न हो । आवष्यकता की चीजें खरीदना, बाजार के आकार्षण से बचना और क्रय–शक्ति का दुरूप्योग न करना–इसी में बाजार की असली उपयोगिता हैं।

प्रश्न 146 'ऐसे बाजार मानवता के लिए विडम्बना हैं।' लेखक ने ऐसा क्यों कहा है ? स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर–लेखक बताता है कि जिसमें लोग आवश्यकता से अधिक सब कुछ खरीदने का दम्भ भरते हैं। अपनी पर्चेजिंग पावर से बाजार को पैसे की विनाशक शक्ति देते है, ऐसे बाजार में छल–कपट, लूट–खसोट और मनमाना व्यवहार बढ़ता हैं। लेखक ने ऐसे बाजार को मानवता के लिए विडम्बना बताया हैं।

प्रश्न 147. चूरन वाले भगतजी पर बाजार का जादू क्यों नहीं चलता था ?

उत्तर–भगतजी का चूरन प्रसिद्व था और हाथों–हाथ बिक जाता था । वे एक दिन में छह आने से अधिक नहीं कमाते थे और इतनी कमाई होते ही बाकी चूरन बच्चो में मुफ्त बॉट देते थें । वे बाजार से काला नमम और जीरा खरीदने जाते, तो सीधे पंसारी के पास जाकर खरीद लाते थें । उन पर चौक बाजार का न कोई आकर्षण रहता था और न कोई लालच बाजार की चकाचौंध से मुक्त रहने से ही उन पर उसका जादू नहीं चलता था।

प्रश्न 148 पर्चेजिंग–पावर का रस किन दो रूपों में प्राप्त होता है? 'बाजार दर्शन' पाठ के आधार पर बताइए ।

उत्तर– पर्चेजिंग–पावर का रस– 1. तरह–तरह की चीजें खरीदने, मकान, कार आदि सुख–विलास की चीजे खरीदने में प्राप्त होता है।

2. कुछ लोगो ऐसी चीजें खरीद लेते हैं, जिनकी उन्है जरूरत नहीं रहती है, परन्तु बाजार पर अपना रौब जमाने के लिए अथवा स्वयं को सम्पन्न बताने के लिए काफी कुछ खरीद लाते हैं और पर्चेजिंग–पावर के कारण गर्व एवं आनन्द का अनुभव करते हैं।

प्रश्न 149 'पैसे की व्यग्य शक्ति ' से लेखक का क्या अभिप्राय है और यह किस प्रकार प्रभावित करती है?

उत्तर–'पैसे की व्यंग्य शक्ति' मन से खाली अर्थात मन से कमजोर व्यक्ति पर अपना प्रभाव डालती है। लेखक ने एक उदाहरण द्वारा बताया है कि जैसे कोई पैदल चल रहा है और उसके पास से धूल उड़ाती मोटर पैदल चलते व्यक्ति को अपनी शक्ति बताती है। यही व्यंग्य शक्ति है कि पैदल चलते व्यक्ति के मन में हीनता के

CBEO BHINDER
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

भाव उत्पन्न होते हैं। वह सोचने को विवश हो जता है कि उसने अमीर के घर जन्म लिया? पैसे की शक्ति अपने सगों के प्रति कृतधन बना देती हैं। उसे उसका जीवन विडम्बना से पूर्ण बताती है कि तुम मुझसे वंचित हो और तुम इसीलिए दुःखी व परेशान है। यह पैसे की व्यंग्य शक्ति मन से कमजोर व्यक्ति को ही विचलित करती है 'भगतजी' जैसे व्यक्तियों को नहीं, जिनके मन में बल है, शक्ति है, जो पैसे के तीखें व्यंग्य के आगे अजेय ही नहीं रहता वरन् उस व्यंग्य की क्रूरता को पिघला भी देता हैं।

प्रश्न 150. जैनेन्द्र कुमार के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय संक्षेप में दीजिए।

उत्तर–लेखक जैनेन्द्र कुमार का जन्म 1905 ई. में अलीगढ़ में हुआ था। बचपन में पिता का देहान्त होने पर मामा द्वारा लालन–पालन हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा हस्तिनापुर के गुरूकुल तथा उच्च शिक्षा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से हुई इनकी प्रसिद्व रचनाएॅ परख, अनाम, स्वामी, सुनीता, त्यागपत्र, कल्याणी, जयवर्द्वन, मुक्तिबोध ;उपन्यासद्धरू संग्रह वातायन, एक रात, दो चिड़िया, फॉसी, नीलम देश की राजकन्या, पाजेब (कहानी–संग्रह); प्रस्तुत प्रश्न, जड़ की बात पूर्वोदय, साहित्य का श्रेय और प्रेय, सोच–विचार (निबन्ध संग्रह) आदि हैं। इन्होंने अपने उपन्यासों एवं कहानियों के माध्यम से एक सशक्त मनोवैज्ञानिक कथा–धारा की शुरूआत की। साहित्य रचना के दौरान इन्हे पद्विभूषण, भारत –भारती तथा साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। देहान्त सन् 1990 में हुआ था।

प्रश्न 151. 'बाजारूपन' से क्या तात्पर्य है? किस प्रकार के व्यक्ति बाजार को सार्थकता प्रदान करते है। अथवा बाजार की सार्थकता किसमें है।

उत्तर–'बाजारूपन' का आशय है–उपरी चमक–दमक और कोरा दिखावा अर्थात व्यवहार का सस्तापन, जिसके लिए व्यक्ति किसी भी स्तर पर उतर आता है। इसी तरह व्यापारी बेकार की चीजो को आकर्षक बनाकार ग्राहकों को ठगने लगते हैं तो वहॉ बाजारूपन आ जाता है। ग्राहक भी जब क्रय–शक्ति के गर्व में अपने पैसे से गैर–जरूरी चीजों को भी खरीद कर विनाशक शैतानी–शक्ति को बढ़ावा देते है, तो वहॉ भी बाजारूपन बढ़ता है। इस प्रवृति से न हम बाजार से लाभ उठा पाते हैं और न बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं। जो लोग बाजार की चकाचौंध में न आकार अपनी आवष्यकता की ही वस्तुएॅ खरीदते हैं, इसी प्रकार दुकानदार भी ग्राहकों को उचित मूल्य पर आवश्यकतानुसार चीजें बेचते हैं, उन्हें लोभ–लालच में रखकर ठगते नहीं हैं, इसमें भी बाजार की सार्थकता है।

प्रश्न 152 कवि गजानन माधव मुक्तिबोध / लेखिका महादेवी वर्मा का जीवन परिचय लिखिए |

CBEO BHINDER
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

उत्तर : कवि परिचय - गजानन माधव मुक्तिबोध

नयी कविता को अर्थवत्ता प्रदान करने वाले कवि गजानन माधव मुक्तिबोध का जन्म सन् 1917 ई. में श्योपुर, ग्वालियर (मध्यप्रदेश) में एक थानेदार के घर में हुआ। इनके पिता माधव राव न्यायप्रिय एवं कर्मठ व्यक्ति थे। अपने पिता के व्यक्तित्व के प्रभाव से मुक्तिबोध में ईमानदारी, न्यायप्रियता और दृढ़ इच्छा शक्ति का प्रतिफलन हुआ। ये किशोरावस्था से ही यायावरी बन गये। उज्जैन में इन्होंने मध्य भारत प्रगतिशील लेखक संघ की नींव डाली। नागपुर से 'नया खून' साप्ताहिक का सम्पादन किया, फिर अध्यापन कार्य अपनाया और दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगाँव में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष रहे। मुक्तिबोध मार्क्सवादी चिन्तनधारा से प्रभावित रहे। अन्तर्मुखी प्रवृत्ति तथा जीवन की विषमताओं के कारण इनका व्यक्तित्व जटिल बना, जिसका प्रभाव उनकी कविताओं पर भी पड़ा। शिल्प की दृष्टि से ये बिम्ब विधान के पक्षधर रहे हैं ।

मुक्तिबोध का रचनात्मक व्यक्तित्व बहुआयामी रहा। इनकी कविताएँ सर्वप्रथम अज्ञेय द्वारा सन् 1943 में सम्पादित तार सप्तक' में प्रकाशित हुईं। इनकी कविताओं के संग्रह हैं—'चाँद का मुँह टेढ़ा है' और 'भूरी-भूरी खाक धूल'; इनका कथा-साहित्य है-'विपात्र', 'सतह से उठता आदमी' तथा 'काठ का सपना'। इनकी आलोचनात्मक कृतियाँ हैं—'कामायनी एक पुनर्विचार', 'नयी कविता के आत्मसंघर्ष', 'नये साहित्य का सौन्दर्य-शास्त्र', 'समीक्षा की समस्याएँ' तथा 'एक साहित्यिक की डायरी'। मुक्तिबोध के समस्त साहित्य को 'मुक्तिबोध रचनावली' नाम से छः खण्डों में प्रकाशित है। इनका देहावसान सन् 1964 ई. में हुआ।

लेखिका परिचय- महादेवी वर्मा

साहित्य-रचना एवं समाज-सेवा के क्षेत्र में महादेवी वर्मा का आदरणीय स्थान रहा है। हिन्दी | साहित्य में रेखाचित्र एवं संस्मरण विधा को आगे बढ़ाने में इनका अनुपम योगदान रहा है। अपने सम्पर्क में आने वाले | व्यक्तियों, साहित्यकारों, जीव-जन्तुओं आदि का संवेदनात्मक चित्रण कर महादेवी ने अतीव मार्मिकता प्रदान की है। ये छायावादी युग की नारी-संवेदना से मण्डित कवयित्री रही हैं। इनकी कविताओं में आन्तरिक वेदना और पीड़ा की | मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है, जिससे वे इस लोक से परे किसी अव्यक्त सत्ता की ओर अभिमुख दिखाई देती हैं। इनकी प्रतिभा कविता और गद्य इन दोनों में अलग-अलग स्वभाव लेकर सक्रिय रही है। गद्य के क्षेत्र में इनका दृष्टिकोण सामाजिक सरोकार के प्रति संवेदनामय रहा है|

महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 में फर्रुखाबाद (उत्तर प्रदेश) में तथा निधन सन् 1987 ई. में इलाहाबाद हुआ। इनकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं-नीहार, नीरजा, रश्मि, सान्ध्यगीत, दीपशिखा तथा यामा (काव्य-संग्रह), | अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, पथ के साथी और मेरा परिवार (संस्मरण-रेखाचित्र), श्रृंखला की कड़ियाँ, आपदा, संकल्पिता, भारतीय संस्कृति के स्वर इत्यादि (निबन्ध-संग्रह) ये ज्ञानपीठ पुरस्कार, भारत भारती पुरस्कार तथा पद्मभूषण से सम्मानित हुई हैं।

.प्रश्न 153 कवि शमशेर बहादुर सिंह / लेखक धर्मवीर भारती का जीवन परिचय लिखिए |

उत्तर : कवि परिचय- शमशेर बहादुर सिंह

शमशेर बहादुरसिंह का जन्म सन् 1911 ई. में देहरादून में हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा देहरादून में हुई तथा इलाहाबाद से बी.ए. उत्तीर्ण कर ये उकील बन्धुओं से चित्रकला का प्रशिक्षण लेने दिल्ली में उनके विद्यालय में प्रविष्ट हुए। फिर इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए. किया और 'रूपाभ' पत्रिका में सहायक सम्पादक बने। तत्पश्चात् 'कहानी', 'नयी

CBEO BHINDER
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

कहानी', 'कम्यून', 'माया', 'नया पथ' आदि अनेक पत्रिकाओं के सम्पादन में सहयोग किया। दिल्ली विश्वविद्यालय में यू.जी.सी. की योजना के अन्तर्गत 'उर्दू-हिन्दी कोश' का सम्पादन किया। सन् 1981-85 तक विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन में प्रेमचन्द सृजनपीठ के अध्यक्ष रहे। उन्होंने सन् 1932-33 में लिखना प्रारम्भ किया। इनकी प्रारम्भिक रचनाएँ 'सरस्वती' एवं 'रूपाभ' में प्रकाशित हुई। इन्हें 'दूसरा सप्तक' का प्रमुख कवि माना जाता है। सन् 1993 में इनका दिल्ली में निधन हुआ

शमशेर बहादुर सिंह पर मार्क्सवादी और प्रयोगवादी दोनों प्रभाव देखने को मिलते हैं। प्रेम, सौन्दर्य, वर्ग-चेतना के साथ जीवन-मूल्यों को इन्होंने विशेष महत्त्व दिया है। इनकी प्रकाशित रचनाएँ हैं—'कुछ कविताएँ', 'कुछ और कविताएँ', 'चुका भी हूँ नहीं मैं', 'इतने पास अपने', 'बात बोलेगी', 'काल तुझसे होड़ है मेरी' आदि। इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार, तुलसी पुरस्कार और कबीर सम्मान आदि पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

लेखक परिचय- धर्मवीर भारती

स्वातन्त्र्योत्तर साहित्यकारों में अग्रणी स्थान रखने वाले धर्मवीर भारती का जन्म इलाहाबाद नगर में सन् 1926 ई. में हुआ। वहीं से उच्च शिक्षा प्राप्त कर ये स्वावलम्बी बने। 'अभ्युदय' और 'संगम' पत्रों का सम्पादन सहयोग करने के बाद ये प्रयाग विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्राध्यापक बने। कुछ समय बाद विश्वविद्यालय की नौकरी छोड़कर मुम्बई चले गये और वहाँ 'धर्मयुग' पत्रिका का सम्पादन करने लगे। इन्हें 'दूसरा सप्तक' के कवियों में स्थान प्राप्त हुआ। इन्होंने अपनी रचनाओं में व्यक्ति स्वातन्त्र्य, मानवीय संकट तथा रोमानी चेतना को अभिव्यक्ति दी है। इनकी रचनाओं में सामाजिक चेतना के साथ संगीत की लय मिलती है। इस विशेषता से ये रोमानी गीतकार माने जाते हैं। इन्हें पद्मश्री, व्यास सम्मान एवं साहित्य जगत् के कई अन्य राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए। भारतीजी का निधन सन् 1997 ई. में हुआ।

रचनाएँ-इन्होंने कविता, कहानी, उपन्यास, निबन्ध, गीतिनाट्य और रिपोर्ताज आदि सभी में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं—'कनुप्रिया', 'सात गीत-वर्ष', 'ठंडा लोहा' काव्य-संग्रह; 'सूरज का सातवाँ घोड़ा', 'गुनाहों का देवता' उपन्यास; 'अंधा युग' गीतिनाट्य; 'मुर्दों का गाँव', 'चाँद और टूटे हुए लोग', 'बन्द गली। का आखिरी मकान' कहानी संग्रह; 'ठेले पर हिमालय', 'कहनी-अनकहनी', 'पश्यन्ती', 'मानव मूल्य और साहित्य' निबन्ध-संग्रह।

प्रश्न 154 कवि फिराक गोरखपुरी / लेखक विष्णु खरे का जीवन परिचय लिखिए |

उत्तर - कवि परिचय- फिराक गोरखपुरी

CBEO BHINDER
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

फिराक गोरखपुरी का मूल नाम रघुपति सहाय फिराक है। इनका जन्म सन् 1896 ई. में गोरखपुर में हुआ। इनकी शिक्षा रामकृष्ण की कहानियों से प्रारम्भ हुई। बाद में अरबी-फारसी और अंग्रेजी में शिक्षा प्राप्त की। सन् 1917 में डिप्टी कलेक्टर के पद पर चयनित हुए, परन्तु एक वर्ष बाद स्वराज्य आन्दोलन के लिए वह नौकरी त्याग दी। स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लेने से डेढ़ वर्ष जेल में रहे। फिर इलाहाबाद विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग में अध्यापक रहे। इनका निधन सन् 1983 ई. में हुआ। साहित्य-रचना की दृष्टि से ये शायरी, गजल एवं वाइयों की ओर आकृष्ट रहे। वस्तुतः उर्दू शायरी का सम्बन्ध रूमानियत, रहस्य और शास्त्रीयता से बँधा रहा है, जिसमें लोक जीवन एवं प्रकृति का चित्रण नाममात्र का मिलता है। फिराक गोरखपुरी ने सामाजिक दुःख-दर्द को व्यक्तिगत अनुभूतियों के रूप में शायरी में ढाला है। इन्होंने भारतीय संस्कृति और लोकभाषा के प्रतीकों को अपनाकर इंसान की विवशताओं एवं भविष्य की आशंकाओं को सच्चाई के साथ अभिव्यक्ति दी है। मुहावरेदार भाषा तथा लाक्षणिक प्रयोग करते हुए इन्होंने मीर और गालिब की तरह अपने भाव व्यक्त किये हैं।

फिराक गोरखपुरी की महत्त्वपूर्ण कृतियाँ हैं—'गुले नग्मा', 'बज्मे जिन्दगी', 'रंगे शायरी', 'उर्दू गजलगोई'। "गुले नग्मा' पर इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा ज्ञानपीठ पुरस्कार और सोवियत लैण्ड नेहरू अवार्ड प्राप्त हुआ। इनकी रुबाइयों का हिन्दी साहित्य में विशेष महत्त्व है।

लेखक-परिचय- विष्णु खरे

समकालीन हिन्दी कविता और आलोचना के विशिष्ट साहित्यकार विष्णु खरे का जन्म सन् 1940 ई. में छिंदवाड़ा (म.प्र.) में हुआ। इन्होंने हिन्दी जगत् को गहरी विचारात्मक कविताएँ दी हैं, तो साथ ही |बेबाक आलोचनात्मक लेख भी लिखे हैं। ये विश्व-सिनेमा के गहरे जानकार हैं और पिछले कई वर्षों से सिनेमा की विधा पर लगातार गम्भीर लेखन करते रहे हैं। विदेश प्रवास के दौरान प्राग के प्रतिष्ठित फिल्म क्लब की सदस्यता प्राप्त कर संसार भर की सैकड़ों फिल्में देखीं। यहीं से इन्होंने सिनेमा-लेखन प्रारम्भ किया। 'दिनमान', 'जनसत्ता', 'हंस', 'कथादेश', 'नवभारत टाइम्स' आदि पत्र-पत्रिकाओं में इनका सिनेमा-विषयक लेखन प्रकाशित होता रहा है। इन्होंने फिल्म को समाज, समय और विचारधारा की कसौटी पर कसने का प्रयास किया है तथा अभिनय, निर्देशन आदि का सूक्ष्म दृष्टि से विश्लेषण किया है। अपने लेखन से इन्होंने हिन्दी में सिनेमा विश्लेषण के अभाव को दूर किया है। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- 'एक गैर-रूमानी समय में', 'खुद अपनी आँख से', 'सबकी आवाज के पर्दे में', "पिछला बाकी' (कविता संग्रह); 'आलोचना की पहली किताब' (आलोचना), 'सिनेमा पढ़ने के तरीके', 'मरु | प्रदेश और अन्य कविताएँ', 'यह चाकू समय', 'कालेवाला' अनुवाद आदि। इन्हें हिन्दी अकादमी सम्मान, शिखर सम्मान, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, रघुवीर सहाय सम्मान आदि से पुरस्कृत होने का सुअवसर मिला है। पाठ-सार-यह पाठ हास्य फिल्मों के महान् अभिनेता और निर्देशक चार्ली चैप्लिन के कलाकर्म की विशेषताओं पर आधारित है। इसका सार इस प्रकार है

CBEO BHINDER

प्रश्न 155 सिल्वर वैडिंग कहानी का मुख्य पात्र है–

(अ) किशन दा (ब) यशोधर बाबू (स) यशोधरा (द) विनीत झा **(ब)**

प्रश्न 156 लोग यशोधर बाबू को किसका मानक पुत्र मानते थे–

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

(अ) चन्द्रमोहन का (ब) राजेश्वर दत्त का (स)किशन दा का (द) धनेश मोहन का **(स)**

प्रश्न 157 यशोधर बाबू को सिल्वर वैडिंग के आयोजन को मानते थे–

(अ) पारंपरिक (ब) समायानुकूल (स) उत्कृष्ट (द) विदेशी परम्परा **(द)**

प्रश्न 158 यशोधर बाबू के कार्यालय में सीधा असिस्टेंट ग्रेड से सलेक्ट होकर आया है–

(अ) चड्डा (ब) दास गुप्ता (स)झा (द) तिवारी **(अ)**

.प्रश्न 159 किशन दा के चरित्र का सबसे उज्जवल पक्ष है–

(अ) ऊँची नौकरी (ब) सुविधाभोगी (स) मिलनसरिता (द) आश्रितों की खैर–खबर रखना **(द)**

.प्रश्न 160 रिक्त स्थानों की पुर्ति उचित शब्दों में कीजिए–

(i) यशोधरा बाबू मैट्रिक पास करते ही **किशन दा** के क्वार्टर में आकर रहने लगे थे। (किशनदा/शिशिर मोहन)

(ii) सिल्वर वैडिंग कहानी में आदर्श और यथार्थ तथा पीढ़ियों के **अन्तर्विरोधी** को उजागर किया गया है। (समन्वय/अन्तर्विरोधी)

(iii) यशोधर बाबू को बेटी को पहनावा **समहाउ प्रॉपर** लगता था (समहाउ प्रॉपर/शालीन)

(iv) सिल्वर वैडिंग पार्टी आयोजित हुई लेकिन यशोधर बाबू ने उसमे **अधूरे मन से** भाग लिया। (पुरे मन से/अधूरे मन से)

प्रश्न 161 सिल्वर वैडिंग कहानी के कहानीकार का नाम लिखिए।

उत्तर– मनोहर श्याम जोशी

प्रश्न 162 सिल्वर वैडिंग कहानी के मुख्य पात्रों के नाम लिखिए।

उत्तर– यशोधर बाबू, किशन दा

प्रश्न 163 यशोधर बाबु ने अपनी पत्नी में समय के अनुसार क्या परिवर्तन देखे ?

उत्तर–यशोधर बाबू की पत्नी बुढ़ापे में भी बगैर बांह का ब्लाउज पहनती थी, ऊँची हील की सेन्डिल पहनती थी, होठों पर लाली और बालों में खिजाब लगती थी।

CBEO BHINDER

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

प्रश्न 164 यशोधर बाबू ने किशनदा के गाँव चले जाने के बाद कौन–कौनसी परम्पराओं का पालन किया था?

उत्तर– घर में होली गवाना, जन्यों पुन्यू के दिन सभी कुमाउँनियों के जनेऊ बदलने के लिए अपने घर बुलाना, रामलीला की तालीम के लिए तालीम के क्वार्टर का एक कमरा दे देना।

प्रश्न 165 सिल्वर वैडिंग पाठ के यशोधर बाबू समय के साथ टल सकने में असफल रहते है, ऐसा क्यो?

उत्तर– यशोधर बाबू पुरानी परम्पराओं को मानते है उन्हे आधुनिक पहनावे पश्चिमी जीवन शैली तथा रहन सहन से नफरत है अतः ढल सकने में असफल है।

प्रश्न 166 यशोधर बाबू अपने बच्चों से क्या अपेक्षा रखते थे? सिल्वर वैडिंग के आधार पर–

उत्तर– संयूक्त परिवार में रहना, अपने रिश्तेदारों की आर्थिक मदद करना आदि उनकी जीवन शैली के अंग थे। इसी व्यवहार की अपेक्षा वे अपने बच्चों से भी करते थे।

प्रश्न 167 यशोधर बाबू की विशेषताओं को लिखिए–

उत्तर– (1) नियमित दिनचर्या (2) सरल जीवन त्याग भावना (3) परम्परा के संरक्षक

प्रश्न 168 यशोधर बाबू दफ्तर में अपने मातहतों से कैसा व्यवहार करते थे?

उत्तर– यशोधर बाबू अपने मातहतों से दफ्तर में एक दुरी बनाकर रखते थे वे हल्की चुटीली बात कहकर सभी बाबूओं के मुस्कराने को मजबूर करते थे।

प्रश्न 169 सिल्वर वैडिंग की मूल संवेदना पर स्पष्ट मत दीजिए–

उत्तर– यशोधर बाबू अपने पिता, रिश्तेदारों, धार्मिक अनुष्ठानों आदि का तिरस्कार करते है लेखक ने पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से ग्रसित युवा पीढ़ी और पुरानी रूढ़ियों से प्रभावित पुरानी पीढ़ी के संघर्ष का चित्रण कर दोनो में समन्वय करने का संदेश दिया है।

प्रश्न 170 कहानी के शीर्षक 'जूझ' का क्या अर्थ है ?

उत्तर- कहानी के शीर्षक 'जूझ' का अर्थ है- संघर्ष।

प्रश्न 171 'जूझ' उपन्यास मूलतः किस भाषा में रचित है?

उत्तर–'जूझ' उपन्यास मूलतः मराठी भाषा में रचित है।

.प्रश्न 172 'जूझ' उपन्यास का नायक पढ़ाई क्यों करना चाहता था ?

उत्तर- यदि पाठशाला जाकर कुछ पढ़-लिख लेगा तो कहीं भी नौकर हो जायेगा जिससे चार पैसे हाथ में भी रह सकेंगे और वह गाँव के ही एक धनी किसान बिठोबा की तरह कुछ अन्य धंधा-कारोबार भी कर सकेगा।

CBEO BHINDER

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

प्रश्न 173 वसंत पाटील से दोस्ती होने के बाद लेखक के व्यवहार में कौन-से परिवर्तन हुए ?
उत्तर- लेखक की दोस्ती वसंत पाटील से हो गई। वह भी गणित में होशियार हो गया। अब दोनों मिलकर कक्षा के अन्य बालकों के सवाल जाँचने लगे थे।

प्रश्न 174 "अकेलापन अथवा एकान्त मनुष्य को योग्य बनाता है।" सिद्ध कीजिए।
उत्तर- एकान्त में मनुष्य की एकाग्रता बढ़ जाती है और वह अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित हो जाता है।

प्रश्न 175 लेखक आनंद यादव संघर्ष करके जीवन को उत्कृष्ट बनाता है। आप इससे कहाँ तक सहमत हैं? 'जूझ' उपन्यास के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
उत्तर- 'जूझ' उपन्यास का अंश होने से यह बात तो स्वतः सिद्ध होती है कि कहानी का नायक एक योद्धा की तरह संघर्ष करके ही अपने जीवन को योग्य बनाता है। उदाहरण के लिए, उसके मन में पढ़ाई करने की इच्छा बलवती होती है। वह अपना उद्देश्य प्राप्त करने के लिए संघर्ष करता है। वह जानता है कि उसका पिता अपने स्वार्थ के कारण उसको खेती में जोतता है और स्वयं इधर-उधर घूमता रहता है। वह संघर्ष करता है, उसकी माँ साथ देती हैं, वे राव-साहब के पास जाते हैं, वह उसे न पढ़ाने के लिए उसके पिता को बुलाकर डाँटते हैं। इस प्रकार उसके पढ़ाई का मार्ग खुल जाता है। जल्दी ही वह कक्षा में प्रथम बन जाता है।

प्रश्न 176 "उलटा अब तो ऐसा लगने लगा कि जितना अकेला रहूँ उतना अच्छा।" कथन के अनुसार आनन्द यादव को अकेला रहना कब से अच्छा लगने लगा ? स्पष्ट कीजिए।
उत्तर- खेत पर काम करते अथवा ढोर चराते समय आनन्द यादव को अकेला रहना बिलकुल अच्छा नहीं लगता था। उसे किसी साथी की जरूरत हमेशा होती थी। जब से उसने स्कूल जाकर पढ़ाई शुरू की थी, उसका ध्यान कविता की ओर हो गया था। वह खेत पर पानी लगाते समय एकान्त में मास्टर से सुनी कविताओं को सस्वर गाता था। मास्टर बैठे-बैठे जैसा अभिनय करते थे, वैसा ही अभिनय वह भी करता था। अब उसे अकेलापन अच्छा लगता था। अकेला रहकर वह ऊँची आवाज में कविता गा सकता था, अभिनय कर सकता था और गाते-गाते नाच भी सकता था। यह सब करने का अवसर उसे अकेला रहने के कारण ही मिलता था। अतः उसे अब अकेलापन बुरा नहीं अच्छा लगता था। वह सोचता था कि जितना अकेला रहूँ उतना अच्छा।

प्रश्न 177 'जूझ' कहानी के आधार पर समझाइए कि लेखक आनंद यादव की मराठी भाषा कैसे सुधरने लगी?
उत्तर- आनंद यादव के स्कूल में सौंदलगेकर नामक शिक्षक थे। वह मराठी भाषा पढ़ाते थे। वह कवि भी थे। कक्षा में कविताएँ गाकर सुनाते भी थे। आनन्द यादव की रुचि उनकी प्रेरणा से कविता की ओर बढ़ी। वह स्वयं कविता लिखता और उनको दिखाता। वे उसमें सुधार करते। धीरे-धीरे आनन्द की उनके प्रति आत्मीयता बढ़ी। आनंद उनके घर जाने लगा। मास्टर जी उसको कवि की भाषा के बारे में समझाते थे। छंद और अलंकारों के बारे में बताते थे। शुद्ध लेखन का ढंग बताते थे तथाअन्य अनेक बातें बताते रहते थे। वे लेखक को पुस्तकें तथा कविता-संग्रह पढ़ने के लिए देते थे। इन बातों तथा सौंदलगेकर से निकटता और अपनापन होने के कारण आनन्द यादव का मराठी भाषा का ज्ञान बढ़ता गया तथा जाने-अनजाने पर उसकी मराठी भाषा सुधरने लगी। सौंदलगेकर का मराठी भाषा पढ़ाने का ढंग अत्यन्त रोचक था। वह अत्यन्त तन्मयता के साथ मराठी पढ़ाते थे। उनका व्यवहार भी छात्रों के प्रति स्नेहपूर्ण था। अतः लेखक के जीवन पर उनका सर्वाधिक प्रभाव पड़ा।

CBEO BHINDER
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

प्रश्न 178 लेखक आनन्द यादव के छात्र-जीवन से क्या-क्या शिक्षा मिलती है?

उत्तर-'जूझ' कहानी की प्रेरणादायी संघर्ष गाथा है। विपरीत पारस्थितियों में माँ को साथ लेकर दत्ताराव को समझाता है, दादा से पढ़ने की अनुमति प्राप्त करता है। खेत में कठोर मेहनत करता हैं विद्यालय में भी कठिनाइयों का सामना करता है। सभी संघर्षों पर विजय पाते हुए लेखक सफलता प्राप्त करता है। 'जूझ' उपन्यास का लेखक आत्मकथात्मक शैली में किशोर मन की उलझनों को अपने ढंग से अभिव्यक्ति प्रदान कर किशोर छात्रों को हर बाधा को पार करके भी पढ़ाई करने और लगन के साथ पढ़कर कक्षा में प्रथम आने की प्रेरणा देता है। साथ ही लेखक का उद्देश्य विद्यार्थियों के मन में यह भाव भी उत्पन्न करना है कि अपने योग्य अध्यापकों से केवल पुस्तकीय ज्ञान ही नहीं वरन् अन्य गुण जैसे कविता करना आदि भी ग्रहण करना चाहिए। कथानायक अपने मराठी के अध्यापक सौंदलगेकर से कविता करना सीखता है और उनसे भी अच्छा कवि बन जाता है।

कथानायक पढ़ाई में बाधक अपने पिता (दादा) को समझाने के लिए दत्ता राव सरकार की सहायता लेता है। यह उसकी चतुराई ही है कि वह दादा को समझाने के लिए दत्ता राव सरकार को और दत्ता राव को समझाने के लिए अपनी माता को तैयार करता है। इस युक्ति से वह अपना लक्ष्य प्राप्त कर लेता है। अतः हर किशोर को अपने छोटे होने की हीनग्रन्थि को त्यागकर अपने अन्दर आत्म-विश्वास पैदा करना चाहिए।

इस प्रकार कथानायक अपनी लगन, परिश्रम और बुद्धिमत्ता से कक्षा में योग्य छात्र वसंत पाटील की बराबरी कर लेता है और उससे भी आगे कवि-अध्यापक सौंदलगेकर से कविता करना सीखकर अपनी योग्यता का परिचय देता है। इस प्रकार इस उपन्यास की रचना का उद्देश्य किशोरों की व्यक्तिगत समस्याओं को स्वयं संघर्ष करके सुलझाने की प्रेरणा देने के साथ-साथ उन्हें योग्य विद्यार्थी बनाना भी है।

CBEO BHINDER

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner